04 - अगरबत्ती से जीवन का सरल, गहरा संदेश

05 - फ्रांस, ग्युस्ताव कुर्बे और यथार्थवादी कला का उद्भव

06 - आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी: ऐसो को उदार हिन्दी...

07 - राष्ट्रभक्ति का अमर स्वर और 'वंदे मातरम'

A Daily News Magazine
इंदौर
रविवार, 21 दिसंबर, 2025

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 85, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

सर्द सुबह और पढ़ाई की गर्मजोशी

फोटो-बंसीलाल परमार

सुप्रभात

किसमें नहीं है थोड़ा सा अहमकपना?
किसमें नहीं है थोड़ी सी व्यग्रता?
कौन है जो कभी टूटा न हो?
किसमें नहीं हुई कभी स्वार्थ की दस्तक?
याद रखो दोस्त
तुम्हारी नहीं,
परिस्थितियों की जनी है
तुम्हारी सौम्यता।
जिस दिन बिस्तर से उठोगे
और देखोगे
अपने आसमान पर निराशा और
नाउम्मीदी का उगा धुंधला सूरज,
जिन रातों में नहीं होगा
हमबगल चंद्रमा सा ये ऐश्वर्य,
जिन दोपहरियों में
लुप्त हो जाएगी विरासत की छाँव
और सांझ
छीनी हुई हवा की अनुपस्थिति में
अकुलाएगा मन,
तब तुम, हां तुम
उतारकर विनम्रता, सदाशयता, सज्जनता
और महानता का चमकदार बाना
एक आदमी की नंगई के साथ
आ जाओगे सामने।
तो बर्दाश्त करो या बदल दो दोस्त।
ये ज़िंदगी की नहीं,
दुनिया की बात है।

– आलोक कुमार मिश्रा

राजधानी में मेट्रो का सपना हुआ साकार

केंद्रीय मंत्री खट्टर-सीएम ने दिखाई हरी झंडी

भोपाल (नप्र)। राजधानी में मेट्रो सेवा का शनिवार को औपचारिक शुभारंभ हो गया। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और केन्द्रीय आवास और शहरी कार्य मंत्री मनोहरलाल खट्टर ने शाम भोपाल के सुभाष नगर मेट्रो ट्रेन स्ट्रेशन से हरी झंडी दिखाकर 7 किलोमीटर ट्रेक में चलने वाली मेट्रो ट्रेन का शुभारंभ किया। इसके बाद दोनों नेताओं ने सुभाष नगर से एम्स तक मेट्रो में सफर किया।

30 स्कूली बच्चों सहित कुल करीब 300 लोग मेट्रो ट्रेन में सवार रहे

इस ऐतिहासिक उद्घाटन यात्रा में 30 स्कूली बच्चों सहित कुल करीब 300 लोग मेट्रो ट्रेन में सवार रहे। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एम्स मेट्रो स्टेशन पर पहुंचे, जहां उनके साथ केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर, नगरीय प्रशासन मंत्री विश्वास सारंग और भाजपा नेता कैलाश विजयवर्गीय समेत अन्य जनप्रतिनिधि मौजूद रहे।

करीब 7 साल बाद भोपाल में मेट्रो का सपना साकार हुआ है। मेट्रो का यह पहला चरण सुभाष नगर से एम्स तक 6.22 किलोमीटर लंबा है, जिसमें कुल 8 स्टेशन शामिल हैं। उद्घाटन से पहले सभी स्टेशनों पर रातभर तैयारियां चलीं और स्टेशनों को फूलों से सजाया गया था। भोपाल मेट्रो सेवा आम यात्रियों के लिए आज से शुरू होगी। इससे शहर के सार्वजनिक परिवहन को नई गति मिलेगी और ट्रैफिक दबाव कम होने की उम्मीद है।

भोपाल मेट्रोपॉलिटन सिटी का भी शुभारंभ

इससे पहले भोपाल मेट्रोपॉलिटन सिटी का भी औपचारिक शुभारंभ किया गया। उद्घाटन समारोह कुशाभाऊ ठाकरे अंतरराष्ट्रीय कन्वेंशन सेंटर (मिंटो हॉल) में आयोजित हुआ, जिसमें कई मंत्री और जनप्रतिनिधि शामिल हुए। कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का रिकॉर्डेड वीडियो संदेश भी दिखाया गया।

भोजपाल मेट्रो हो नाम: सांसद शर्मा

औपचारिक शुभारंभ के साथ ही भोपाल मेट्रो के नामकरण को लेकर राजनीति भी शुरू हो गयी है। भोपाल के सांसद आलोक शर्मा ने भोपाल मेट्रो का नाम भोजपाल मेट्रो रखने की पुरजोर मांग उठायी है। सांसद श्री शर्मा का कहना है कि मेट्रो के भूमिपूजन कार्यक्रम में तत्कालीन सीएम कमलनाथ ने मेरे बतौर महापौर के प्रस्ताव पर भोपाल की बजाए, भोजपाल मेट्रो के नामकरण की मंच से ही सहमति दी थी। कमलनाथ की सहमति का उनकी ही पार्टी के विधायक आरिफ मसूद ने तब विरोध किया। उसी विधायक को राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम गाने से परहेज है। सांसद श्री शर्मा ने मुख्यमंत्री डा मोहन यादव से भोपाल मेट्रो का नाम भोजपाल मेट्रो करने की मांग की है।

मेट्रो ट्रेन से विकास को लग जाते हैं पंख: सीएम यादव

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मेट्रो ट्रेन को शनिवार की शाम सुभाष नगर से एम्स मेट्रो स्टेशन तक 7 किलोमीटर का सफर किया। इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर ने भी उनके साथ यात्रा की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मेट्रो ट्रेन से विकास को पंख लग जाते हैं। इससे शहर के विकास की नई कहानी शुरू हो जाती है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने एम्स मेट्रो रेल स्टेशन पर उपस्थित नागरिकों और मीडिया प्रतिनिधियों से चर्चा की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सफर के दौरान भी अनेक यात्रियों से बातचीत की और उनके अनुभव जाने। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने भोपाल की इस मेट्रो ट्रेन यात्रा में अपना अनुभव बताते हुए कहा कि ऊंचाई पर बने ट्रेक से ट्रेन यात्रा करते हुए दोनों ओर शहर की हरियाली और सुंदरता देखने का अनुभव भी अपने आप में बेजोड़ है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भोपाल में यह शहरी ट्रांसपोर्ट के क्षेत्र में बड़ी सौगात है।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सभी यात्रियों सहित एम्स आने वाले रोगियों और नागरिकों के लिए यह महत्वपूर्ण सुविधा है। उन्होंने मध्यप्रदेश सरकार की ओर से केंद्रीय मंत्री मनोहरलाल का अभिनंदन किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि इंदौर मेट्रो से जुड़े हर कार्य के लिये केंद्र सरकार आवश्यक धनराशि भी प्रदान कर रही है। मध्यप्रदेश में शहरी विकास योजनाओं में भारत सरकार का पूरा सहयोग मिल रहा है। आज ही 262 विकास कार्यों की शुरुआत की गई है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मेट्रो ट्रेन के शुभारंभ पर समस्त राज्य की जनता को बधाई दी। केन्द्रीय मंत्री श्री मनोहरलाल ने भोपाल को मिली इस विशेष सुविधा को समय की बचत और पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से महत्वपूर्ण बताया।

बिहार ने दिया मौका, अब बंगाल की है बारी: मोदी

- पीएम बोले-बंगाल में महाजंगल राज घुसपैठियों को बचाने की हो रही कोशिश

कोलकाता (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बंगाल में एसआईआर के दौरान 58 लाख नाम डिलीट किए जाने के बाद बड़ा हमला बोला है। पीएम मोदी ने शनिवार को नादिया जिले में आने वाले राणाघाट की रैली को मोबाइल से संबोधित किया। खराब मौसम के कारण पीएम मोदी का हेलीकॉप्टर लैंड नहीं कर पाया। पीएम मोदी ने कहा कि टीएमसी भाजपा का विरोध करना चाहती है। उन्हें हमारा जमकर बार-बार, पूरी ताकत से विरोध करने दीजिए। मुझे समझ नहीं आता कि पश्चिम बंगाल के विकास में रुकावट क्यों डाली जा रही है। आप मोदी का विरोध कर सकते हैं, लेकिन बंगाल के लोगों को दुखी मत कीजिए। उन्हें उनके अधिकारों से वंचित मत कीजिए। उनके सपनों को तोड़ने का पाप मत कीजिए। पीएम मोदी ने कहा कि बंगाल में घुसपैठियों को बचाने की कोशिश हो रही है।

त्रिपुरा की तुलना में बंगाल विकास के मामले में पिछड़ रहा है

मोदी बोले– प्रधानमंत्री ने त्रिपुरा से बंगाल की तुलना करते हुए कहा– वामपंथी शासन ने तीन दशकों के अपने शासनकाल में त्रिपुरा को बर्बाद कर दिया था, लेकिन भाजपा को अपनाने के बाद राज्य तेजी से विकास कर रहा है। भाजपा शासित त्रिपुरा की तुलना में बंगाल विकास के मामले में पिछड़ रहा है, जबकि त्रिपुरा तेजी से प्रगति कर रहा है। पीएम ने कहा– इस बार मौसम ने कठिनाइयां पैदा की हैं। मैं नहीं पहुंच सका।

बंगाल और बंगाली भाषा ने भारतीय संस्कृति को समृद्ध किया

बंगाल और बंगाली भाषा ने भारत के इतिहास और संस्कृति को लगातार समृद्ध किया है। वंदे मातरम ऐसी ही एक रचना है। पूरा देश वंदे मातरम की 150वीं वर्षगांठ मना रहा है, जिस पर संसद में भी चर्चा हुई। इस धरती ने देश को बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय जैसा ऋषि दिया है। बंकिम बाबू ने गुलाम भारत में नई चेतना दी।

देश में बनी 205 दवाओं के सैंपल हो गए फेल

- सीडीएससीओ के ड्रग अलर्ट में खुलासा, 47 दवाएं चिन्हित

हिमाचल में मैन्युफैक्चर, खांसी-बुखार, हार्ट की मेडिसिन शामिल

शिमला (एजेंसी)। केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन के ड्रग अलर्ट में देश में बनी 205 दवाओं के सैंपल फेल हो गए। इनमें 47 दवाएं हिमाचल में बनी है। ये दवाएं बुखार, शुगर, दिल, मिर्गी, संक्रमण और पेट से जुड़ी बीमारियों के इलाज में इस्तेमाल की जाती हैं। हिमाचल की ये दवाएं इंडस्ट्रियल एरिया बद्दी, बरोटीवाला, नालागढ़, सोलन, कालाअंब, पांवटा साहिब और ऊना स्थित फार्मा इकाइयों में निर्मित की गई थीं। संगठन द्वारा जारी नवंबर के ड्रग अलर्ट के अनुसार, गुणवत्ता जांच में फेल पाई गई इन दवाओं को 'नॉट ऑफ स्टैंडर्ड क्वालिटी' घोषित किया गया। हिमाचल में बनी दवाओं के 35 दवाओं के सैंपल राज्य की प्रयोगशालाओं और 12 सैंपल केंद्रीय प्रयोगशालाओं में फेल पाए गए। सिरमौर जिले के कालाअंब स्थित एक कंपनी पर छापा मारा है।

- **सोलन, सिरमौर और ऊना की कंपनियां शामिल–** हिमाचल में जिन जिलों की कंपनियों की दवाएं फेल हुई हैं, उनमें सोलन जिले की 28, सिरमौर की 18 और ऊना की एक कंपनी शामिल है। सभी संबंधित कंपनियों को नोटिस जारी कर दिए गए हैं। हिमाचल के ड्रग कंट्रोलर मनीष कपूर के अनुसार, ड्रग अलर्ट में जिन उद्योगों की दवाओं के सैंपल फेल हुए है, उन सभी की कंपनियों को नोटिस जारी किए जाएंगे।

चीन ने समंदर में खोजा सबसे बड़ा सोने का भंडार

- 1 महीने में यह दूसरी बड़ी खोज, मालामाल हुआ ड्रैगन

बीजिंग (एजेंसी)। चीन ने अपना पहला समुद्र के नीचे सोने का भंडार खोज लिया है। फिलहाल इसे एशिया का सबसे बड़ा समुद्री सोने का भंडार माना जा रहा है। चीन के लिए ये एक बहुत बड़ी कामयाबी है क्योंकि चीन, पिछले कई सालों से कीमती धातुओं की खोज के लिए काम कर रहा है और ऐसे में सोने का भंडार मिलना बहुत बड़ी बात है। साउथ चायना मॉर्निंग पोस्ट की रिपोर्ट के मुताबिक, शेडोंग प्रांत के यानताई में लाइझोउ के तट पर सोने के इस विशालकाय भंडार को खोजा गया है। इस खोज के बाद लाइझोउ का कुल सोने का भंडार 3,900 टन से ज्यादा हो गया है, जो देश के कुल भंडार का लगभग 26 प्रतिशत है। इस

खोज के साथ ही चीन, सोने के भंडार और उत्पादन दोनों में टॉप पर आ गया है। यानताई प्रांत की सरकार ने इस हफ्ते मौजूदा पांच साल की योजना के दौरान अपनी उपलब्धियों के बारे में खुलासा किया है।

- **चीन ने एक महीने में खोजा दूसरी बार सोने का खजाना–** रिपोर्ट के मुताबिक, इससे पहले नवंबर में लियाओनिंग प्रांत में 1,444 टन से ज्यादा के सुपर–लार्ज, लो–ग्रेड गोल्ड डिपॉजिट की घोषणा की गई थी, जिसे 1949 में कम्युनिस्ट चीन की स्थापना के बाद सबसे बड़ा एकल स्वर्ण भंडार बताया गया। इसके अलावा, शिनजियांग के पास कुनलुन पर्वत श्रृंखला में भी 1,000 टन से ज्यादा के अनुमानित सोने के भंडार मिलने की सूचना दी गई थी। खास बात यह है कि जियाओडोंग प्रायद्वीप को पहले से ही बड़ी गोल्ड माइनिंग बेल्ट माना जाता है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 25°c न्यूनतम 20°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 21 दिसंबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

ऑपरेशन सिंदूर के बाद आर्मी की बड़ी तैयारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय सेना 850 कामिकेज ड्रोनों की खरीद के लिए पूरी तरह तैयार है, जिनका इस्तेमाल तीनों रक्षा बलों और स्पेशल फोर्स के लिए किया जाएगा। भारतीय थल सेना का प्रस्ताव अब मूंजरी मिलने के करीब है। रक्षा स्रोतों ने एएनआई को बताया कि इस महीने के अंतिम सप्ताह में होने वाली हाई-लेवल मीटिंग में इसे मंजूरी मिलने की संभावना है। फास्ट-ट्रैक प्रक्रियाओं के तहत लागू किए जाने वाले प्रस्ताव के अनुसार, थल सेना को स्वदेशी स्रोतों से लगभग 850 लॉइटरिंग म्यूनिशन्स लॉन्चरों के साथ मिलेंगे। भारतीय थल सेना विभिन्न स्रोतों से प्राप्त बड़ी संख्या में लॉइटरिंग म्यूनिशन्स का उपयोग करती है। अब निकट भविष्य में अपनी सभी

850 कामिकेज ड्रोन खरीदने जा रही है भारतीय सेना

लड़ाकू इकाइयों को सुसज्जित करने के लिए लगभग 30 हजार ऐसे हथियारों को शामिल करने की योजना है। थल सेना की इन्फैंट्री बटालियनों में प्रत्येक में एक अश्विनी प्लाटून होगी, जिसके पास दुश्मन ठिकानों के खिलाफ ड्रोनों का संचालन करने और आतंरिक सुरक्षा भूमिकाओं में भी जिम्मेदार होगी। थल सेना ने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान के अंदर आतंकी मुख्यालयों को निशाना बनाया था।

30 हजार ड्रोन शामिल किए जाएंगे

भारतीय सेना पहले से ही विभिन्न स्त्रोतों से प्राप्त बड़ी संख्या में लोइटरिंग म्यूनिशन का उपयोग कर रही है और आने वाले समय में करीब 30,000 ड्रोन शामिल करने की योजना पर भी काम चल रहा है। इसके तहत हर इन्फैंट्री बटालियन में एक 'अश्नि प्लाटून' गठित की जाएगी, जो दुश्मन के ठिकानों पर हमले और आतंकवाद-रोधी अभियानों में ड्रोन संचालन की जिम्मेदारी संभालेगा।

नौ में सात आतंकी ठिकाने किए थे तबाह

ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारतीय सेना ने ड्रोन का व्यापक इस्तेमाल करते हुए पाकिस्तान के भीतर आतंकी ठिकानों को निशाना बनाया था। पहलगाम आतंकी हमले के जवाब में चलाए गए इस अभियान के पहले ही दिन नौ में से सात आतंकी ठिकाने तबाह कर दिए गए थे। बाद में, आतंकियों का बचाव करने उतरी पाकिस्तानी सेना के खिलाफ भी ड्रोन का प्रभावी इस्तेमाल किया गया, जिससे भारी नुकसान और बड़े पैमाने पर ढांचागत क्षति हुई। कामिकेज ड्रोन को लोइटरिंग म्यूनिशन या सुसाइड ड्रोन भी कहा जाता है। ये ऐसे मानवरहित हवाई वाहन (यूएवी) होते हैं जिन्हें एक बार इस्तेमाल होने वाले मिशन के लिए तैयार किया जाता है। वे लक्ष्य के ऊपर मंडराते हैं, दुश्मन के ठिकानों की पहचान करते हैं, और फिर लक्ष्य से जाकर टकरा जाते हैं। इससे उनमें लगा विस्फोटक पेलोड फट जाता है। कॉमिकेज जापानी शब्द है, जिसका अर्थ है तूफान। दूसरे विश्व युद्ध के दौरान, यह शब्द जापानी आत्मघाती पायलटों का पर्याय बन गया, जो अपने प्लेन दुश्मन के जहाजों से टकरा देते थे। इन पायलटों ने दुश्मन को पलटवार करने का मौका नहीं दिया, और ऐसा करके ज्यादा से ज्यादा नुकसान पहुंचाने के लिए अपना बलिदान कर देते थे।

इमरान खान को कोर्ट से लगा तगड़ा झटका

● पत्नी बुशरा बीबी को भी 17 साल की सजा

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान की अदालत से पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान और उनकी पत्नी बुशरा बीबी को तगड़ा झटका लगा है। अदालत ने उन्हें

भ्रष्टाचार के एक मामले में 17-17 साल कैद की सजा सुनाई है। इमरान खान पहले से ही जेल में बंद हैं और कई मामलों में सजा काट रहे हैं। यह मामला 2021 में खान और बीबी को सऊदी सरकार से मिले सरकारी उपहारों में हुई कथित धोखाधड़ी से जुड़ा है। विशेष अदालत के न्यायाधीश शाहरुख अर्जुमंद ने रावलपिंडी में स्थित उच्च सुरक्षा वाली अदियाला जेल में इस मामले में फैसला सुनाया। खान और बुशरा को पाकिस्तान दंड संहिता की धारा 409 (आपराधिक विश्वासघात) के तहत 10-10 साल और भ्रष्टाचार निरोधक अधिनियम की विभिन्न धाराओं के तहत सात-सात साल कैद की सजा सुनाई गई। अदालत ने दोनों पर एक-एक करोड़ रुपये जुर्माना भी लगाया। अडियाला जेल के बाहर विरोध प्रदर्शन करने के आरोप में इमरान पकड़ाए हैं।

जम्मू-कश्मीर के रतले हाइड्रो प्रोजेक्ट पर आतंकी खतरा

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ में चिनाब नदी पर बन रहे रतले हाइड्रो प्रोजेक्ट पर खतरा मंडरा रहा है। जम्मू-कश्मीर पुलिस के मुताबिक प्रोजेक्ट में काम कर रहे 29 मजदूरों के टेरर लिंक मिले हैं। ये कर्मचारी देश विरोधी और क्रिमिनल एक्टिविटी में शामिल थे। पुलिस ने कंपनी से इन कर्मचारियों को काम पर रखने के फैसले पर फिर से विचार करने को कहा है।

ऐसे लोग प्रोजेक्ट की सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा पैदा कर सकते हैं। कंपनी को ऐसे मजदूरों की गतिविधियों पर कड़ी नजर रखनी चाहिए। 850 मेगावॉट क्षमता वाला यह प्रोजेक्ट नेशनल हाइड्रो पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड और जम्मू-कश्मीर सरकार का जॉइंट वेंचर है। जिसकी अनुमानित लागत 3700 करोड़ रुपये है। कंस्ट्रक्शन का काम मेघा इंजीनियरिंग एंड इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड को दिया गया है। पूरा मामला 1 नवंबर का है जानकारी अब सामने आई है। दरअसल पुलिस ने प्रोजेक्ट में काम कर रहे मजदूरों का वेरिफिकेशन किया था। जिसमें यह बात सामने आई कि प्रोजेक्ट में काम करे 29 मजदूरों में से 5 मजदूर ऐक्टिव या सरेंडर आतंकियों के रिश्तेदार हैं।

29 मजदूरों के टेरर लिंक मिले
कंपनी बोली- हटाना मुश्किल लेकिन नजर रखेंगे

एक कर्मचारी के चाचा हिजबुल मुजाहिदीन का आतंकी मोहम्मद अमीन है। यह आतंकी प्रोजेक्ट में काम कर रहे दो अन्य मजदूरों का भाई भी है। वहीं एक अन्य कर्मचारी के पिता पहले आतंकी रह चुके हैं हालांकि वो सरेंडर कर चुके हैं। जबकि एक मजदूर के पिता की पहचान ओवर ग्राउंड वर्कर के रूप में दर्ज है।

भोपाल में हुई शहरी विकास मंत्रियों की क्षेत्रीय बैठक

आजादी के 100 साल को ध्यान में रखते हुए तैयार करें शहरों के विकास की योजना : केन्द्रीय मंत्री मनोहर लाल

आत्मनिर्भर नगर निगम की दिशा में काम कर रहे : मंत्री विजयवर्गीय

भोपाल (नप्र)। केन्द्रीय आवासन एवं शहरी कार्य मंत्री श्री मनोहर लाल ने कहा है कि शहरों के विकास के लिये केन्द्र सरकार से मिलने वाली बजट राशि का पूरा उपयोग समय पर किया जाए। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2047 तक विकसित और आत्मनिर्भर भारत की जो कल्पना की है, उसे तभी पूरा किया जा सकेगा, जब केन्द्र और राज्य सरकार पूरे समन्वय के साथ कार्य करेंगी। केन्द्रीय शहरी कार्य मंत्री श्री मनोहर लाल शनिवार को भोपाल के कुशाभाऊ इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर मे शहरी विकास मंत्रियों की क्षेत्रीय बैठक (उत्तरी एवं मध्य राज्य) को संबोधित कर रहे थे। बैठक में मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान और उत्तरप्रदेश के शहरी विकास मंत्री, राज्य मंत्री, भारत सरकार एवं राज्यों के अधिकारियों की बैठक को संबोधित कर रहे थे। केन्द्रीय मंत्री श्री मनोहर लाल ने स्वच्छ सर्वेक्षण 2025-26 के लिये तैयार की गई कार्य दिशा पुस्तिका का विमोचन किया। केन्द्रीय शहरी मंत्री

मनोहर लाल ने कहा कि वर्ष 2047 तक भारत की शहरी आबादी अनुमान के मुताबिक कुल आबादी की 50 प्रतिशत तक हो जाएगी। जब हम इसे ध्यान में रखते हुए शहरी योजनाओं का क्रियान्वयन करेंगे, तभी विकसित और आत्मनिर्भर भारत बना सकेंगे। उन्होंने कहा कि शहरी कार्य मंत्रालय ने योजनाओं के बेहतर क्रियान्वयन के लिये देश में क्षेत्रवार राज्यों की बैठक करने का निर्णय लिया है। उन्होंने कहा कि हर राज्य की भौगोलिक स्थिति और परेशानियां अलग है। केन्द्रीय मंत्री ने कहा कि राज्यों के विकास के लिये केन्द्र सरकार सपोर्टिंग सिस्टम के रूप में काम करती है, ठोस प्रयास तो राज्य सरकारों को ही करना होगा।

ठोस कार्य योजना करें तैयार

केन्द्रीय शहरी मंत्री मनोहर लाल ने कहा कि क्षेत्रीय बैठक में प्रधानमंत्री आवास योजना, अमृत योजना, स्वच्छ भारत मिशन और शहरी परिवहन व्यवस्था पर मुख्य रूप से चर्चा की जा रही है। उन्होंने प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) में तैयार मकानों के आवंटन न होने पर चिंता प्रकट की। राज्य सरकारों को यह प्रयास करना होगा कि जनता की वित्तीय हिस्सेदारी में प्रभावी रूप से किया जाये। केन्द्रीय मंत्री ने कहा कि सबको आवास केन्द्र सरकार की फ्लेगशिप योजना है।

मध्यप्रदेश में नगरीय निकायों को बनाया जा रहा है आत्मनिर्भर

मध्यप्रदेश के नगरीय विकास एवं आवास मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय ने बताया कि प्रदेश में नगरीय निकायों को आर्थिक और तकनीकी रूप से आत्मनिर्भर बनाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि नर्मदा नदी के किनारे बसे शहरों में सीवरेज कार्य को प्राथमिकता दी गई है। राज्य सरकार ने संकल्प लिया है कि नर्मदा नदी में गंदा पानी न मिलाया जाये। उन्होंने बताया कि प्रदेश की नगरीय क्षेत्रों में सम्पत्तियों की जीआई मेपिंग की गई है।

राजधानी एक्सप्रेस से टकराया हाथियों का झुंड

8 की मौत, 5 डिब्बे और इंजन पटरी से उतरे

होजाई (एजेंसी)। असम के होजाई जिले में शनिवार तड़के एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है। सैरांग-नई दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस ट्रेन एक हाथियों के झुंड से टकरा गई। इस हादसे में आठ जंगली हाथियों की मौत हो गई, जबकि एक हाथी गंभीर रूप से घायल हो गया। वन विभाग के एक अधिकारी ने इसकी पुष्टि की है। हादसा इतना बड़ा था कि ट्रेन के कई डिब्बे पटरी से उतर गए। पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी कपिंजल किशोर शर्मा से मिली जानकारी के अनुसार यह घटना सुबह करीब 02.17 बजे हुई। हादसे का स्थान गुवाहाटी से लगभग 126 किलोमीटर दूर

बताया गया है। लोको पायलट ने ट्रैक पर हाथियों के झुंड को देखकर इमरजेंसी ब्रेक लगाया, लेकिन इसके बावजूद हाथियों की ट्रेन से टक्कर हो गई, जिससे इंजन समेत छह कोच डिरेल हो गए। घटना की सूचना मिलते ही दुर्घटना राहत ट्रेन और लुमडिंग मंडल मुख्यालय के अधिकारी मौके पर पहुंच गए। साथ ही एनएफ रेलवे के महाप्रबंधक और लुमडिंग मंडल रेल प्रबंधक भी घटनास्थल के लिए रवाना हो गए। प्रभावित कोचों के यात्रियों को ट्रेन के अन्य कोचों में उपलब्ध खाली बर्थ पर अस्थायी रूप से सुरक्षित शिफ्ट किया गया। रेलवे प्रशासन ने यात्रियों की सहायता के लिए गुवाहाटी रेलवे स्टेशन पर हेल्पलाइन नंबर भी जारी किए हैं- 0361-2731621/ 2731622 / 2731623। रेलवे अधिकारी ने बताया कि प्रभावित कोचों को अलग करने के बाद ट्रेन को सुबह 06.11 बजे गुवाहाटी के लिए रवाना कर दिया गया। गुवाहाटी पहुंचने पर यात्रियों की सुविधा के लिए अतिरिक्त कोच जोड़े जाएंगे, जिसके बाद ट्रेन आगे की यात्रा के लिए रवाना होगी। रेलवे के अनुसार जिस स्थान पर हादसा हुआ, वह अधिसूचित हाथी कॉरिडोर नहीं है।

आरएसएस के लिए सच्चाई नहीं, शक्ति जरूरी:राहुल

● कांग्रेस नेता जर्मनी में बोले, की आरएसएस चीफ मोहन भागवत की आलोचना

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने शुक्रवार को जर्मनी की राजधानी बर्लिन में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ चीफ मोहन भागवत की आलोचना की। राहुल ने कहा- आरएसएस चीफ खुले तौर पर कह रहे हैं कि सच्चाई का कोई महत्व नहीं है, शक्ति महत्वपूर्ण है। यही उनमें और हममें अंतर है। राहुल ने कहा- हमारी पूरी संस्कृति सत्य पर आधारित है। आप किसी भी धर्म को देख लें, मूल रूप से वे यही कहते हैं कि सत्य का पालन करो। कांग्रेस, महात्मा गांधी और आप सभी, हम

भारत के सत्य की रक्षा करते हैं। आरएसएस, ऐसा नहीं करती। बता दें कि राहुल गांधी 5 दिन के जर्मनी दौरे पर हैं। उन्होंने शुक्रवार को ओवरसीज इंडियन कांग्रेस के कार्यक्रम कनेक्टिंग कल्चर्स में भारतीय समुदाय को संबोधित किया। इसके अलावा उन्होंने जर्मन थिंक-टैंक में शामिल नेताओं के साथ बातचीत की।

जस्टिस स्वामीनाथन के साथ आए देश के 36 पूर्व न्यायाधीश

विपक्ष पर बोला हमला,महाभियोग प्रस्ताव को बताया लोकतंत्र पर खतरा

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के 36 पूर्व न्यायाधीशों ने विपक्षी दलों के नेताओं द्वारा मद्रास हाईकोर्ट के जस्टिस जीआर स्वामीनाथन के खिलाफ महाभियोग लाने की पहल की कड़ी निंदा की। पूर्व न्यायाधीशों ने सांसदों सहित आम लोगों से इस कदम का विरोध करने की अपील की है। साथ ही जजों ने कहा, कि यदि ऐसे प्रयासों को आगे बढ़ने दिया गया तो यह लोकतंत्र और न्यायपालिका की स्वतंत्रता पर सीधा हमला होगा। शनिवार को 36 पूर्व न्यायाधीधों द्वारा लिखे गए लेटर मे कहा कि यह महाभियोग प्रस्ताव के जरिए उन जजों को डराने-धमकाने की एक खुली कोशिश है जो समाज के किसी खास वर्ग की वैचारिक और राजनीतिक उम्मीदों के हिसाब से नहीं चलते। पूर्व जजों ने आगे कहा, अगर ऐसी कोशिश को आगे बढ़ने दिया गया, तो यह हमारे लोकतंत्र और न्यायपालिका की आजादी की जड़ों को काट देगा। पूर्व जजों ने सभी से अपील की है।

राजस्थान के सीएम भजनलाल शर्मा ने कर दी बड़ी घोषणा

● अब एमपी और यूपी में राजस्थान के लोगों को मिलेगा मुफ्त इलाज ● आउटबाउंड पोर्टेबिलिटी लागू करने वाला पहला राज्य होगा राजस्थान

जयपुर (एजेंसी)। राजस्थान देश का पहला राज्य बन गया है जहां आयुष्मान आरोग्य योजना के तहत राज्य से बाहर भी चिकित्सा सुविधाएं मिलने वाली है। हाल ही में राजस्थान के लोगों को गुजरात में निशुल्क इलाज की सुविधा मिलनी शुरू हुई है। अब मुख्यमंत्री भजनलाल अब एक बड़ी घोषणा की है। उन्होंने उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश में भी राजस्थान के लोगों को मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना के तहत मुफ्त इलाज शुरू करने का ऐलान किया है। उन्होंने आयुष्मान आरोग्य योजना में आउटबाउंड पोर्टेबिलिटी व्यवस्था को प्रदेशवासियों के लिए लाभदायक बताया। आगामी दिनों में यह सुविधा शुरू हो जाएगी तो प्रदेश के लाखों लोगों को पड़ोसी राज्यों में भी मुफ्त चिकित्सा सुविधाएं मिल सकेंगी। हाल ही में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने 'आउटबाउंड पोर्टेबिलिटी' लागू किया है।

मोदी सरकार ने मनरेगा पर चला दिया बुलडोजर

सोनिया बोलीं-नए काले कानून के खिलाफ लड़ने को प्रतिबद्ध

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस संसदीय दल की प्रमुख सोनिया गांधी ने शनिवार को आरोप लगाया कि मोदी सरकार ने मनरेगा पर बुलडोजर चला दिया है और करोड़ों किसानों, श्रमिकों एवं भूमिहीन ग्रामीण वर्ग के गरीबों के हितों पर हमला किया है। उन्होंने यह भी कहा कि पार्टी नए काले कानून के खिलाफ लड़ाई को प्रतिबद्ध हैं। सोनिया गांधी ने विकसित भारत-जी राम जी विधेयक संसद से पारित होने के बाद यह बात कही। कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी ने एक वीडियो संदेश में कहा, मुझे आज भी याद है, 20 साल पहले डॉ. मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री थे, तब संसद में मनरेगा कानून आम राय से पास किया गया था। यह ऐसा क्रांतिकारी कदम था, जिसका फायदा करोड़ों ग्रामीण परिवारों को मिला था। खासतौर पर वंचित, शोषित, गरीब और अतिगरीब लोगों के लिए रोजी-रोटी का जरिया बना। उन्होंने कहा, रोजगार के लिए अपनी माटी, अपना गांव, अपना घर-परिवार छोड़कर पलायन करने पर रोक लगी। रोजगार का कानूनी हक दिया गया, साथ ही ग्राम पंचायतों को ताकत मिली। मनरेगा के जरिए महात्मा गांधी के ग्राम स्वराज के सपनों के भारत की ओर एक ठोस कदम उठाया गया।

बाल गृह से भागे किशोर को पुलिस ने हिरासत में लिया

इंदौर। बाल गृह समाज कल्याण परिसर से गुरुवार शाम को भागा 12 वर्षीय किशोर आखिरकार मिल गया है। किशोर को परदेशीपुरा थाना क्षेत्र के कुलकर्णी (भट्ट) नगर में लावारिस हालत में घूमते हुए देखा गया। सूचना मिलते ही हीरानगर पुलिस मौके पर पहुंची और उसे अपने साथ थाने ले आई। बताया गया है कि शाम 7 बजे जब बाल गृह में बच्चों को भोजन दिया जा रहा था, तब गिनती के दौरान बच्चा कम पाया गया। कर्मचारियों ने परिसर में तलाश की, लेकिन किशोर कहीं नहीं मिला। बाद में अन्य बच्चों से पूछताछ करने पर पता चला कि वह छत के रास्ते बाउंड्री वॉल तक पहुंचा और दीवार फांदकर बाहर निकल गया। किशोर रतलाम का निवासी है और उसकी मानसिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण उसे समाज कल्याण परिषद के बाल गृह में रखा गया था। इस मामले में बाल गृह के चौकीदार रामसखी सुनहरे की शिकायत पर हीरानगर पुलिस ने अपहरण का मामला दर्ज किया था और तभी से उसकी तलाश की जा रही थी। हीरानगर टीआई सुशील पटेल के अनुसार, संभवतया सुरक्षा कर्मचारियों की शिफ्ट बदलने के दौरान किशोर बाल गृह से भागने में सफल हो गया। फिलहाल किशोर सुरक्षित है और उससे जुड़ी अन्य जानकारियां जुटाई जा रही हैं। पुलिस और समाज कल्याण विभाग की टीम आगे की कार्रवाई में जुटी हुई है।

दो स्थानों से जब्त 15 चाइनीज मांझा रोल

इंदौर। चाइनीज मांझा की खरीदी बिक्री पर कलेक्टर ने रोक लगा रखी है। पुलिस ने इसे बेचने और खरीदने वाले पर लगातार कार्रवाई कर रही है। फिर भी बिक्री थमने का नाम नहीं ले रही। गुरुवार को पुलिस ने दो स्थानों से 15 चाइनीज मांझा जब्त किए। इसके पहले बुधवार को खजराना पुलिस ने चाइनीज मांझा बेचने वाले दुकानदारों का जुलूस निकाला था। एरोड्रम पुलिस को सूचना मिली थी कि छोटा बांगड़दा रोड पर एक युवक चाइनीज मांझा सप्लाय करने घुम रहा है। जानकारी मिलते ही तत्काल पुलिस की टीम मौके पर पहुंची और निषार्थ पिता पवन सिसोदिया को पकड़ा। उसके कब्जे 10 रोल जब्त किए। आरोपी ने बताया कि वह लंबे समय से यह धंधा कर रहा है। इसी प्रकार, संयोगितागंज पुलिस ने पतंग उड़ाते नाबालिग को पकड़ा। उसने पूछताछ में बताया कि मांझा सन्नी पिता राजेन्द्र अग्रवाल निवासी सुखदेव नगर से खरीदा है। आरोपी सन्नी से 4 रोल बरामद किए हैं।

डेढ़ लाख की ड्रग्स मजदूर से जब्त

इंदौर। नशे से दूरी है जरूरी अभियान के धता बताते हुए बदमाश लगातार मादक पदार्थ की खरीद फरोख्त कर रहे हैं। इसी क्रम में क्राइम ब्रांच ने संजय सेतु पर घुम रहे मजदूर को पकड़ा। उसके पास से 16.13 ग्राम एमडी ड्रग्स(करीब एक लाख 60 हजार रुपए) की जब्त की। पकड़े गए बदमाश का नाम नहरु खान निवासी आजाद नगर है। वहीं, हीरानगर पुलिस ने अरबाज उर्फ अब्बू अली पिता मोहम्मद संलीम खान निवासी मदीना नगर को 13.63 ग्राम ड्रग्स के साथ गिरफ्तार किया। वह कुमेड़ी आईएसबीटी के पास ड्रग्स सप्लाय करने घूम रहा था।

डीएवीवी के छात्रों के दो गुटों में भिड़ंत

इंदौर। भंवरकुआ थाना क्षेत्र में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय (डीएवीवी) के छात्रों के दो गुटों के बीच जमकर विवाद हो गया। यह घटना स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स की पार्किंग में हुई, जहां कहासुनी के बाद मामला मारपीट तक पहुंच गया। ग्राम अजनोद निवासी आर्यन बिलावलिया की शिकायत पर पुलिस ने अंशुल और तनिष के खिलाफ मामला दर्ज किया है। आर्यन के मुताबिक गुरुवार दोपहर वह अपनी कार के पास खड़ा था, तभी उसके दोस्त हर्ष से अंशुल और तनिष की बहस हो गई। विवाद बढ़ने पर आरोपियों ने लात-घूंसे और बेल्ट से मारपीट की। बीच-बचाव करने पर आर्यन के साथ भी मारपीट की गई और उसकी कार के शीशे तोड़ दिए गए। पुलिस ने मामले में एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

कार रुकवाकर युवती से बदतमीजी

इंदौर। रेडिसन चौराहे के पास सिरफिरे युवक ने बीच रास्ते में कार रुकवाकर न केवल युवती से बदतमीजी की, बल्कि बीचबचाव करने आए उसके दोस्त से मारपीट की। विजयनगर पुलिस ने फरियादी सानिध्य सिंह पिता डॉ कमलेश सिंह चौहान निवासी रानी बाग की रिपोर्ट पर आरोपी वैदिक सोनी निवासी स्कीम 78 पर केस कर लिया है। सानिध्य ने बताया कि वह कार से जा रहा था और बगल वाली सीट पर उसकी महिला मित्र बैठी थी। रेडिसन चौराहे के पास आरोपी ने कार के आगे अपनी बाइक अड़ाकर रास्ता रोक लिया। फिर उसने कार का दरवाजा खोलकर युवती से अभद्र भाषा में सवाल किया। जब मैंने इसका विरोध तो वह गाली-गलौज करने लगा। विवाद इतना बढ़ा कि आरोपी ने सानिध्य के साथ हाथ-मुक्कों से मारपीट की।

मोहल्ले में रेत की गाड़ी को लेकर विवाद

इंदौर। नंदबाग कॉलोनी में रेत की गाड़ी बुलाने जैसी मामूली बात पर विवाद इतना बढ़ गया कि आरोपियों ने एक परिवार के घर में घुसकर मारपीट और तोड़फोड़ कर दी। बाणगंगा पुलिस को फरियादी श्रवण कुमार पिता मिथिलाप्रसाद मिश्रा निवासी नंदबाग कॉलोनी ने बताया कि 13 दिसंबर को उनके घर रेत की गाड़ी आई थी, जिसे लेकर मोहल्ले में ही रहने वाले तेजसिंह गौर, भूपेश गौर और बलराम गौर ने विवाद किया था। इसी रंजिश के चलते अगली सुबह करीब 9.30 बजे तीनों अपने कुछ अन्य साथियों के साथ मेरे घर में घुस आए। फिर आरोपियों ने गाली-गलौज कर मारपीट की। पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। इसी प्रकार, चंदन नगर क्षेत्र में शराब पीने के रुपए न देने पर बदमाशों ने बीयर की बॉटल से बुजुर्ग पर हमला कर सिर फोड़ दिया। घायल का नाम सुरेश पिता केशरसिंह निवासी बागरी मोहल्ला लाबरिया भेरु है। उसकी रिपोर्ट पर आरोपी दीपक पिता मंगू निवासी गडरिया मोहल्ला और गणेश पिता कैलाश निवासी चांदमारी कंपाउंड पर केस दर्ज किया है।

दुकान के गल्ले से 78 हजार रुपए उड़ाए

इंदौर। अरविंदो अस्पताल के समीप स्थित नाश्ता दुकान को निशाना बनाते हुए अज्ञात चोर ने गल्ले में रखी हजारों की नकदी पर हाथ साफ कर दिया। फरियादी विक्की पिता स्वर्गीय संजय तिवारी निवासी सुदामा कुंज विहार बृज धाम कॉलोनी ने बाणगंगा पुलिस को बताया कि दुकान के पीछे पीछे लगी सुरक्षा जाली उचकी हुई पाई गई। चोर ने बेहद शातिराना तरीके से दुकान के पीछे लगी जाली को उचकाया और वहां से भीतर प्रवेश किया। इसके बाद आरोपी ने सीधे गल्ले को निशाना बनाया और उसमें रखी 78 हजार रुपए लेकर चंपत हो गया।

रेल से कटकर महिला ने आत्महत्या की, देर रात वह घर से निकल गई

इंदौर। बाणगंगा क्षेत्र की महिला ने शुक्रवार सुबह ट्रेन के सामने कूदकर आत्महत्या कर ली। तीन माह पहले ही उसने बेटे को जन्म दिया था। आत्महत्या का कारण स्पष्ट नहीं हो सका। जीआरपी पुलिस के अनुसार, तड़के 5 बजे निकिता (35) पत्नी मुकेश परमार निवासी कर्मा नगर बाणगंगा के प्लेटफॉर्म नंबर-1 के पास घायल हालत में मिली थी। घटना के बाद पुलिस को महिला के पास से मोबाइल मिला, जिसके जरिए कन्नौद में रहने वाले उसके भाई को सूचना दी गई। भाई ने इंदौर में रहने वाले चाचा संतोष निवासी राजनगर को जानकारी दी। इसके बाद चाचा ने पति को फोन कर निकिता के बारे में पूछा। मुकेश ने बताया कि वह कमरे में नहीं है, शायद बाहर गई होगी। जब वह बाहर आया तो घर का दरवाजा बाहर से बंद मिला। परिजनों के मुताबिक, निकिता रात में अपने तीन माह के बेटे के साथ कमरे में सोई थी।

राजा हत्याकांड पूर्व नियोजित षड्यंत्र, पत्नी सोनम मास्टरमाइंड, चार्जशीट में खुलासा

शिलांग पुलिस की दाखिल चार्जशीट में सोनम को लेकर सनसनीखेज खुलासे

इंदौर। शहर के ट्रांसपोर्ट कारोबारी राजा रघुवंशी की हनीमून के दौरान शिलांग में हुई बेरहमी से हत्या अब पूरी तरह सुलझ गई है। मेघालय पुलिस ने इस हत्याकांड में कोर्ट में चार्जशीट दाखिल कर दी। चार्जशीट में सोनम का कबूलनामा, आरोपियों के मोबाइल फोन, हत्या के वक्त पहने कपड़े, लॉज का सीसीटीवी फुटेज, टैक्सी ड्राइवर के बयान और ट्रॉली बैग का सीसीटीवी फुटेज शामिल किए हैं। पुलिस के मुताबिक यह हत्या कोई अचानक हुआ हादसा नहीं, बल्कि महीनों पहले रची सुनियोजित साजिश थी, जिसकी मास्टरमाइंड खुद राजा की पत्नी सोनम रघुवंशी निकली। चार्जशीट के अनुसार, राजा रघुवंशी अपनी पत्नी सोनम के साथ हनीमून मनाने शिलांग गया था।

23 मई को शिलांग के पास वाइसाडोंग सेल्फी पॉइंट पर सोनम ने प्रेमी राज कुशवाह के साथ मिलकर राजा की हत्या करवा दी। हत्या को अंजाम देने के लिए राज ने विशाल चौहान, आनंद कुर्मी और आकाश सिंह राजपूत को पहले ही शिलांग भेज दिया था। उधर, सेशन कोर्ट ने सोनम

की जमानत याचिका पर सुनवाई के बाद शुक्रवार को जमानत निरस्त कर दी।

बुर्का पहनकर इंदौर पहुंची

हत्या के बाद सोनम ने अपनी पहचान छिपाने बुर्का पहनकर सड़क और ट्रेन के जरिए गुवाहाटी, सिलीगुड़ी, बिहार के आरा और लखनऊ होते हुए इंदौर पहुंची। इंदौर में वह सीधे राज कुशवाह के घर चार दिन रुकी। इसके बाद सोनम और राज देवास नाके स्थित अपार्टमेंट में किराए के फ्लैट में साथ रहने लगे। फ्लैट का किराया 60 हजार रुपए राज ने दिया था। पुलिस को फ्लैट में दोनों की मौजूदगी के सीसीटीवी फुटेज और ऑनलाइन पेमेंट के सबूत भी मिले।

फिल्मी अंदाज में फरारी

गिरफ्तारी से पहले सोनम और राज ने एक नई योजना बनाई। सोनम को इंदौर से सिलीगुड़ी भेजने की तैयारी थी, जहां वह अपहरण की झूठी कहानी गढ़ने वाली थी। 8 जून की सुबह 3 बजे सोनम बुर्का पहनकर कार से निकली, लेकिन रास्ते में ही साथियों की गिरफ्तारी की सूचना मिल गई। इसके बाद गाजीपुर हाईवे पर ढाबे से सोनम को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। कोर्ट ने सोनम रघुवंशी, राज कुशवाहा, विशाल चौहान, आनंद कुर्मी और आकाश सिंह राजपूत के खिलाफ आरोप तय कर दिए हैं। सभी की जमानत याचिका खारिज हो चुकी है और मामले में ट्रायल शुरू हो गया है।

यहीं काम खत्म करो

पुलिस का दावा है कि सेल्फी पॉइंट पर पहुंचते ही सोनम ने विशाल को इशारा करते हुए कहा था 'यहीं काम खत्म करो, इसके बाद मौका नहीं मिलेगा।' विशाल और आनंद ने स्कूटी की डिक्की से डाउ (तेजधार हथियार) निकालकर राजा पर हमला किया। सिर पर वार से राजा वहीं ढेर हो गया। इसके बाद शव को सेल्फी पॉइंट की ग्रिल के नीचे गहरी खाई में फेंक दिया गया। जांच में सामने आया है कि हत्या की साजिश हनीमून पर नहीं, बल्कि शादी के बाद इंदौर में ही रच ली गई थी। हनीमून पर जाने से ठीक पहले सोनम ने अपने कपड़े और निजी सामान से भरा काला ट्रॉली बैग राज को सौंप दिया था। यह इस बात का सबूत है कि सोनम को भरोसा था कि वह इस यात्रा से अकेली लौटेगी।

फ्लाइट कैंसिल होने से यात्री घटे दूसरे व्यवसाय भी प्रभावित हुए

होटल बुकिंग निरस्त, टैक्सी के कामकाज पर असर पड़ा

इंदौर। देवी अहिल्याबाई होलकर एयरपोर्ट को बीते सप्ताह भर में करीब दो करोड़ रुपए से ज्यादा का नुकसान उठाना पड़ा। विमानों की लगातार उड़ानें रद्द होने से होटल, पर्यटन और टैक्सी व्यवसाय के साथ एयरपोर्ट की राजस्व व्यवस्था भी प्रभावित हुई। इंडिगो की फ्लाइट कैंसिल होने का सिलसिला अब भी जारी है और पिछले दो दिनों से रोज एक से दो उड़ानें निरस्त हो रही हैं। उड़ानें रद्द होने का असर सिर्फ यात्रियों पर ही नहीं, बल्कि इंदौर एयरपोर्ट अथॉरिटी की आय पर भी पड़ा। इंदौर एयरपोर्ट से रोज करीब 12 से 14 हजार यात्री यात्रा करते हैं, जिनमें आधे आने और आधे जाने वाले होते हैं।

इंदौर से संचालित उड़ानों में इंडिगो का नेटवर्क सबसे बड़ा है और यहां की आधे से अधिक उड़ानें इसी एयरलाइन पर निर्भर हैं। 4 से 8 दिसंबर के बीच इंडिगो की कई उड़ानें प्रभावित रहीं, जिससे इन दिनों में यात्रियों की औसत संख्या 40 से 45 प्रतिशत तक घट गई। 5 दिसंबर को स्थिति सबसे ज्यादा खराब रही, जब करीब 5 से 6 हजार यात्रियों को उड़ानें रद्द होने के कारण एयरपोर्ट से लौटना पड़ा। इंडिगो ने यात्रियों को टिकट की पूरी राशि वापस कर दी, लेकिन उड़ानें निरस्त होने से एयरपोर्ट अथॉरिटी को मिलने वाला शुल्क लगभग शून्य हो गया, जिससे भारी आर्थिक नुकसान हुआ।

यात्री संख्या आधी रह गई

एयरपोर्ट के टैक्सी वालों का कहना है कि उस समय लोग आए और अंदर ही एयरपोर्ट में फंसे रहे। कई लोगों ने अपने रिश्तेदारों को एयरपोर्ट पर लेने बुला लिया। लोगों को फ्लाइट निरस्त होने की सूचना पहले मिल गई। लोग आए ही नहीं, इससे हमें सवारी नहीं मिली। अब जाकर हालात सामान्य हुए हैं। इसके अलावा पार्किंग को लेकर भी बड़ा नुकसान हुआ है। ट्रैवल एजेंटों का कहना है कि इस संकट से बड़ी संख्या में पैकेज और होटल रूम भी निरस्त हुए। इससे भी काफी नुकसान हुआ है। होटलों ने क्रेडिट नोट बनाकर दिए हैं, लेकिन उससे मनचाही डेट पर बुकिंग नहीं हो पा रही है।

अथॉरिटी की आय में कमी

किसी भी विमानन कंपनी का टिकट बुक कराने पर यात्रियों से यूजर डेवलपमेंट फीस (यूडीएफ), रीजनल कनेक्टिविटी चार्ज (आरसीसी) और एविएशन सिक्योरिटी फीस मिलाकर औसतन 700 रुपए से अधिक शुल्क वसूला जाता है। यह शुल्क अलग-अलग एयरपोर्ट पर अलग-अलग होता है, जिसे एयरपोर्ट अथॉरिटी यात्री सुविधाओं के रखरखाव और विस्तार पर खर्च करती है। सामान्य दिनों में प्रतिदिन मिलने वाले यात्री शुल्क के मुकाबले संकट के दिनों में प्रतिदिन लगभग 5 हजार से 6 हजार यात्रियों से शुल्क नहीं मिल पाया। यानी एयरपोर्ट को रोजाना लगभग 35-40 लाख रुपए तक की चपत लगी। सूत्रों की मानें तो एयरपोर्ट अथॉरिटी को पांच दिनों का कुल नुकसान 1.75 से 2 करोड़ रुपए या उससे अधिक होने का अनुमान है।

कंडक्टर की हत्या का राज खुला बस ड्राइवर ही निकला आरोपी

शॉर्ट पीएम रिपोर्ट से उजागर हुई मारपीट की सच्चाई

इंदौर। तीन दिन पहले एमआईजी थाना क्षेत्र में बस के नीचे मिले कंडक्टर के शव का मामला अब हत्या में बदल गया है। पहले इसे शराब के नशे में गिरने से हुई मौत बताया जा रहा था, लेकिन शॉर्ट पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद सच्चाई सामने आ गई। रिपोर्ट में शरीर पर गंभीर चोटों के निशान मिलने के बाद पुलिस ने हत्या का केस दर्ज किया है। मृतक की पहचान सचिन पिता सुखदेव मंडलोई निवासी डाबरी जिला खरगोन के रूप में हुई है। पुलिस ने इसी बस के ड्राइवर रतलाल उर्फ रतनलाल गुर्जर निवासी मानपुर को आरोपी बनाया है, जिसे हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। शव मिलने के बाद ड्राइवर रतनलाल ने पुलिस को बताया था कि कंडक्टर सचिन शराब के नशे में था और बस में चढ़ते समय गिर गया, जिससे उसके सिर में चोट लग गई। उसने यह भी दावा किया कि ठंड और खुले में पड़े रहने के कारण उसकी मौत हो गई, लेकिन पुलिस को शुरू से ही इस कहानी पर शक था। गुरुवार शाम आई शॉर्ट पीएम रिपोर्ट में सचिन के शरीर पर चोट के निशान मिले। इसके बाद जब पुलिस ने ड्राइवर से सख्ती से पूछताछ की तो उसने मारपीट करना कबूल कर लिया। आरोपी ने बताया कि शराब के नशे में सचिन उससे झगड़ा कर रहा था, गुस्से में आकर उसने रॉड से उसकी पिटाई कर दी और घायल हालत में उसे मैदान में छोड़कर बस में जाकर सो गया था। सुबह उठने के बाद उसने देखा की सचिन की मौत हो गई है तब खुद को बचाने पुलिस को सूचना दी।

बस मरम्मत के दौरान विवाद- पुलिस के अनुसार दोनों इंदौर-शिर्डी-पुणे रूट की बस में साथ काम करते थे। बस खराब होने पर रोबोट चौराहे के पीछे मरम्मत कराई जा रही थी, इसी दौरान दोनों के बीच विवाद हुआ जो हिंसक झगड़े में बदल गया। पुलिस की मानें तो घटना के कुछ देर पहले होटल में खाना खाते समय भी विवाद हो गया था। तभी से रतनलाल ने खुन्नस पाल रखी थी। मारपीट करने के बाद बस मालिक को पूरी कहानी बताई थी। पुलिस ने उसकी रिकार्डिंग भी जब्त कर ली है। आरोपी ड्राइवर के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज कर लिया है।

कारोबारी दंपत्ति ने बहू पर लगाए लीगल टेररिज्म, कब्जे के आरोप

गाजियाबाद, दिल्ली की कोर्ट में केस दर्ज कराए गए

इंदौर। शांति निकेतन क्षेत्र में रहने वाले वरिष्ठ नागरिक दंपत्ति कनकलता सिंघानिया और विनोद ने बहू रुचि शर्मा और उसकी बहन मिया शर्मा पर गंभीर आरोप लगाए हैं। दंपत्ति का कहना है कि वे तीन वर्ष से झूठे आपराधिक मामलों, कानूनी दबाव और संपत्ति हड़पने के प्रयासों का सामना कर रहे हैं, जिसे वे 'लीगल टेररिज्म' करार दे रहे हैं। परिजनों के अनुसार, शादी के कुछ महीनों बाद ही वर्ष 2022 में रुचि दंपत्ति की पैतृक संपत्ति लेकर गाजियाबाद चली गई थी। इस संबंध में थाना लसूड़िया में एफआईआर दर्ज कराई गई थी। दंपत्ति का आरोप है कि इसके बाद रुचि ने गाजियाबाद और दिल्ली की कोर्ट में बलात्कार, दहेज प्रताड़ना और घरेलू हिंसा के मामले दर्ज कराए। हालांकि, गाजियाबाद पुलिस की जांच में बलात्कार और अजन्मे बच्चे की हत्या जैसे गंभीर आरोप निराधार बताया। जांच में दंपत्ति के पोते, बेटी और दामाद के नाम भी आरोपों से हटाए गए।

समझौता भी हो चुका

मामले में एक और पहलू तब सामने आया जब रुचि के कथित पूर्व पति के परिवार ने सिंघानिया दंपत्ति से संपर्क कर बताया कि वे भी इसी तरह के मामलों का सामना कर चुके हैं। उस समय कई परिजनों के खिलाफ केस दर्ज कराए गए थे, जिनका अंत समझौते में हुआ। घटना ने तब और गंभीर रूप ले लिया जब 19 अक्टूबर को रुचि ने जबरन घर में घुसकर मारपीट और ऊपरी मंजिल पर कब्जा करने का आरोप लगाया। इसके बाद 14 दिसंबर को हुई एक अन्य कथित मारपीट की घटना में हृदय रोग से पीड़ित कनकलता को गंभीर हालत में बॉम्बे हॉस्पिटल के आईसीयू में भर्ती कराना पड़ा, जिसके बाद पुलिस ने की विभिन्न धाराओं में प्रकरण दर्ज किया।

'जेन-झेड' पोस्ट ऑफिस की शुरुआत पारंपरिक डाक सेवाएं डिजिटल हुई

आईआईएम कैंपस में प्रदेश का पहला युवाओं का पोस्ट ऑफिस

इंदौर। मध्य प्रदेश को आधुनिक डाक सेवाओं की दिशा में एक नई पहचान मिली है। राज्य का पहला नवश्रृंगारित 'जेन-जेड' पोस्ट ऑफिस आईआईएम के राऊ स्थित कैंपस परिसर में शुरू किया गया। इस अत्याधुनिक उपडाकघर का शुभारंभ पोस्टमास्टर जनरल इंदौर डाक परिक्षेत्र प्रीति अग्रवाल एवं आईआईएम इंदौर के निदेशक प्रोफेसर हिमांशु राय ने किया।

'जेन-जेड' पोस्ट ऑफिस को युवाओं की सोच, तकनीक और सुविधा को ध्यान में रखकर विकसित किया गया है, जहां पारंपरिक डाक सेवाओं को आधुनिक डिजिटल स्वरूप प्रदान किया गया। यहां माई-स्टाम्प काउंटर, पार्सल बुकिंग व

पैकेजिंग सुविधा, पीपीएम,आईपीबी जैसी वित्तीय सेवाओं के साथ-साथ फ्री वाई-फाई, कैफेटेरिया, व्यवस्थित बैठक व्यवस्था एवं त्वरित सेवा सहायता उपलब्ध कराई गई है। युवाओं को आकर्षित करने के लिए मनोरंजन के साधन भी शामिल किए गए हैं, जिनमें स्ट्रिंग हॉकी, स्नेक-एंड-लैडर, लूडो एवं शतरंज जैसे खेल मौजूद हैं। इस पोस्ट ऑफिस की सबसे विशेष बात यह है कि इसके आंतरिक व बाहरी स्वरूप को आईआईएम के विद्यार्थियों ने स्वयं आधुनिक वॉल पेंटिंग, थीम ग्राफिक्स और यूथ-ओरिएंटेड डिजाइन के माध्यम से सजाया है, जो जेन-ं की रचनात्मकता और नवाचार का सजीव उदाहरण प्रस्तुत करता है।

इस अवसर पर प्रोफेसर हिमांशु राय ने भारतीय डाक सेवा के ऐतिहासिक योगदान की सराहना करते हुए विभाग को बधाई दी। वहीं पोस्टमास्टर जनरल प्रीति अग्रवाल ने इसे युवाओं से सीधा जुड़ाव स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल बताया। कार्यक्रम में डाक विभाग के वरिष्ठ अधिकारी,आईआईएम के कर्मचारी एवं छात्र बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

इंदौर समेत मालवा के कई शहरों में शीतलहर, इंदौर में पारा 4.1 डिग्री

मंदसौर में पारा 4.4 डिग्री रहा, फ़िलहाल बदलाव नहीं होगा

इंदौर। शहर और आसपास के जिलों में रात का तापमान तेजी से गिर रहा है। गुरुवार रात का तापमान 4.1 डिग्री मापा गया। इस मौसम का ये अब तक का सबसे कम तापमान है, जो औसत से 7 डिग्री कम रहा। करीब 25 दिन से न्यूनतम तापमान 10 डिग्री से कम दर्ज हुआ। पिछली तीन रातों से न्यूनतम तापमान 4 से 5 डिग्री सेल्सियस दर्ज हो रहा। इसके बाद मंदसौर में पारा 4.4 डिग्री रहा। सुबह 9 बजे तक सर्दी रहने के बाद ठंड गायब होने लगती है। 10 बजे के बाद गर्म कपड़ों की जरूरत ही महसूस नहीं होती। इस कारण अधिकतम तापमान 27 डिग्री तक पहुंच गया। इसके पीछे कारण यह कि रात से सुबह के बीच कोल्ड वेव तो चल रही, लेकिन दिन में मंद हो रही है। इस सीजन में केवल 16 नवंबर का दिन कोल्ड डे रहा। इस दिन अधिकतम तापमान सामान्य से 5 डिग्री कम रहकर 25.9 दर्ज किया गया, जबकि न्यूनतम तापमान औसत से 7 डिग्री कम रहकर 7.2 डिग्री आंका गया।

कोल्ड डे का मापदंड - कोल्ड डे तब माना जाता है, जब दिन का पारा सामान्य से 5 डिग्री कम और न्यूनतम तापमान 10 डिग्री कम रहता है। न्यूनतम पारा 5-6 डिग्री तक चला जाए और दिन का पारा सामान्य से 6 डिग्री कम रहे तो सीवियर कोल्ड डे कहलाता है। मौसम विशेषज्ञ के अनुसार रात में तो कड़ाके की ठंड रहेगी, लेकिन दिन में तेज ठंड का असर जनवरी के पहले सप्ताह से ही होगा।

मंदसौर में पारा 4.4- सर्द हवाओं के कारण प्रदेश में ठिठुरन बरकरार है। गुरुवार को प्रदेश में सबसे कम 4.4 डिग्री सेल्सियस तापमान मंदसौर में दर्ज किया गया। भोपाल, इंदौर एवं शाजापुर जिलों में शीतलहर का प्रभाव रहा। 23 शहरों में रात का पारा 10 डिग्री सेल्सियस से कम रहा। सतना, रीवा एवं दतिया जिलों में सुबह के समय हल्का कोहरा छाया रहा।

नर्मदापुरम में सर्दी कम - नर्मदापुरम में दिन का सबसे अधिक 30 डिग्री सेल्सियस तापमान रिकॉर्ड किया गया। शुक्रवार को भोपाल, इंदौर, राजगढ़, सीहोर एवं शाजापुर में शीतलहर का प्रभाव रह सकता है। ग्वालियर, चंबल, रीवा, सागर संभाग के जिलों में मध्यम स्तर का कोहरा छा सकता है। इस बारे में मौसम विज्ञान केंद्र का कहना है कि वर्तमान में एक पश्चिमी विक्षोभ दक्षिण-पश्चिम ईरान और उसके आसपास हवा के ऊपरी भाग में चक्रवात के रूप में बना हुआ है। एक अन्य पश्चिमी विक्षोभ जम्मू एवं उसके आसपास हवा के ऊपरी भाग में चक्रवात के रूप में बना हुआ है। इसके अतिरिक्त उत्तर भारत के ऊपर 12.6 किलोमीटर की ऊंचाई पर 195 किमी. प्रति घंटा की रफ्तार से जेट स्ट्रीम हवाएं चल रही हैं।

अभी बदलाव की संभावना नहीं

मौजूदा मौसम प्रणालियों के प्रभाव से मौसम के मिजाज में विशेष परिवर्तन होने की संभावना कम ही है। मौसम विशेषज्ञ अजय शुक्ला ने बताया कि वर्तमान में सक्रिय पश्चिमी विक्षोभ की तीव्रता कम है। इस वजह से मौसम के मिजाज पर विशेष प्रभाव पड़ने की संभावना कम है। इससे ठंड के तेवर अभी तीखे ही बने रहेंगे।

कहानी

रविकांत राऊत

मन की गाँठें

मेरे अध्ययन कक्ष की शामें बड़े सधे हुए अंदाज़ में उतरती हैं–किताबों की गंध, कागज़ की धीमी सरसराहट और बाहर से आती शरद ऋतु की ठंडी हवा।

ऐसे ही एक शाम, दरवाज़े पर हल्की-सी दस्तक हुई।

दरवाज़ा खुला तो सामने थे– अर्जुन और मीरा ।दोनों की आँखों में प्रेम था, गहरा पर उस प्रेम पर चढ़ी अर्थों की परतें इतनी भारी थीं कि उनका उजाला धुँधला पड़ चुका था।

उनके चेहरे कह रहे थे कि कुछ कीमती बार-बार टूटकर चिपकाया गया है–और हर बार कुछ न कुछ कमज़ोर हुआ है।

सर अर्जुन ने धीमी आवाज़ में कहा, ÷हम लड़ते ही रहते हैं। हर बात पर।

मीरा की आँखें नम हो उठीं, वो मुझे सुनते नहीं। मुझे लगता है, अब ये मुझसे प्यार ही नहीं करते अर्जुन ने दबी हुई झुंझलाहट से कहा, तुम हर बात के पीछे कोई छिपा हुआ अर्थ ढूँढ़ लेती हो, मीरा!

मैंने उन्हें बैठने का संकेत किया।

मेरी मेज़ पर रखा अल्फ़्रेड कोर्ज़िब्स्की का पुराना संस्करण जैसे इसी दृश्य का प्रतीक्षारत दर्शक था। मैंने शांत स्वर में कहा– तुम दोनों एक ही गलती करते हो

घटना और अर्थ को एक समझना।

दोनों चौंककर मेरी ओर देखने लगे।

मैंने उदाहरण दिया–

मीरा कहती हैं 'तुमने मेरा फोन नहीं उठाया।'

यह घटना है–एक तथ्य।

जबकि मीरा इसका अर्थ लगा लेती हैं–'तुम मुझे महत्व नहीं देते।'

और अर्जुन इसका अर्थ बना लेते हैं– 'तुम मुझ पर नियंत्रण चाहती हो।'

देखा?

शब्द नहीं लड़ते– अर्थ लड़ते हैं। अर्थ, जिन्हें तुमने ही थोप दिया है।

उनके भीतर कुछ टूटा–और कुछ जागा। कमरे में एक गहरी शांति उतर आई। फिर मैंने कुछ कागज़ उनके सामने रखे।

घटना लिखो। और उसके नीचे– वह अर्थ जो तुमने चिपकाया।

जैसे-जैसे शब्द उतरते गए, वे दोनों यह देखकर स्तब्ध थे कि उनकी लड़ाइयों का कारण घटना नहीं, अर्थ थे।

फिर मैंने उन्हें अभ्यास दिया– अगले एक सप्ताह– हर झगड़े में सिर्फ घटना देखो। जैसे कोई कैमरा देखता है। बिना निर्णय, बिना अर्थ। वे मेरे अध्ययन कक्ष से निकले– थोड़ी शंका, थोड़ी आशा और बहुत-सी चुप्पियों के साथ। एक सप्ताह बाद वे फिर आए।

इस बार चेहरे बदले हुए थे– उन पर तनाव की खाँचें कम थीं, और आँखों में हल्की-सी चमक लौट आई थी। अर्जुन ने कहा– कल मैं देर से घर पहुँचा। पहले की तरह झगड़ा नहीं हुआ।मीरा ने बस इतना कहा– 'घटना यह है कि तुम आठ बजे आए, जबकि हमने छह बजे डिनर तय किया था।'और मैंने भी अर्थ न जोड़कर केवल तथ्य कहा– 'मीटिंग लंबी हो गई। नेटवर्क नहीं था, संदेश नहीं भेज पाया।'पहले यह बात 'तुम्हारी नौकरी तुमसे ज़्यादा महत्वपूर्ण है' वाली लड़ाई बन जाती। इस बार हम दोनों सिर्फ़ मुस्कुराए।

मीरा की आँखों में नई चमक थी– और जब मैंने कहा कि मेरी पेंटिंग बिक गई, तो अर्जुन ने पहले की तरह नहीं कहा–'अब तुम क्या फुल-टाइम आर्टिस्ट बनने का सपना देख रही हो?'

बल्कि उन्होंने पूछा– 'किसने खरीदी?'

और फिर मेरी खुशी में ऐसे शामिल हुए जैसे यह जीत हम दोनों की हो।

उन्होंने यह भी सीखा कि–'तुम चुप हो' का अर्थ 'तुम नाराज़ हो' नहीं होता। 'तुम बाहर गए' का अर्थ 'तुम मुझे टाल रहे हो' नहीं होता।

कई बार घटना सिर्फ घटना होती है– और प्रेम का ज़हर उन अर्थों में छिपा होता है जिन्हें हम अपने डर से गढ़ लेते हैं। प्रेम में विनाश अक्सर शब्दों से नहीं, उन पर चढ़ाए गए अर्थों की मोटी परतों से आता है।

जब हम अर्थों की गाँठें खोल देते हैं–तब प्रेम अपने सबसे सच्चे रूप में लौट आता है।

अर्जुन और मीरा अब हथियार लेकर नहीं, घटनाएँ लेकर बातचीत करते हैं। उन्होंने प्रेम को अर्थों की जेल से बाहर निकाला– और उसे फिर से उड़ते हुए पक्षी की तरह आज़ाद कर दिया।

जब वे उस शाम मेरे अध्ययन कक्ष से निकल रहे थे, उनके हाथ एक-दूसरे में थे– लेकिन इस बार उस पकड़ में कोई भय नहीं था, सिर्फ़ समझ की स्थिर गर्माहट थी।

मैंने मन ही मन सोचा– प्रेम मरता नहीं। हम ही अर्थों से उसे घायल कर देते हैं।

और यदि मेरी यह कहानी आपके भीतर भी किसी पुरानी गाँठ को हल्का कर पाई– तो समझिए, हमने आज मिलकर एक और प्रेम को अर्थों के भार से मुक्त कर दिया।

आप भी अपनी कहानियाँ साझा कीजिए, ताकि हम सब मिलकर प्रेम की इस ज्योति को फैलाएँ। आपकी प्रशंसा ही मेरी स्याही है!

तुम्हीं सत्य हो, तुम ही ईश्वर

डॉ.वीरेंद्र प्रसाद

तुम्हीं सत्य हो, तुम ही ईश्वर
तन क्षणभंगुर, तुम नित्य अमर।

सीमाओं में, तुम असीम परिधि
बंधन वण में, बंधमुक्त सतत
बहुरूप धरे, पर नित एक रूप
डाल-डाल संघर्ष, मूल शांति सतत
पवन मंद मृदु सुगंध बिखेरे
अनृत, कुरूप, कुत्सित में सुंदर
तुम्हीं सत्य हो, तुम ही ईश्वर।

गर्वित गगन में नहीं झुका शीश
पर अंक लिये तुम दीन क्षार
कभी-कभी पावन मन, गल जाता
मृदु तन सह लेता कुलिश भार
तन-मन-धन सर्वस्व वार कर
चिर पथ तुम हो, नव जीवन वर
तुम्हीं सत्य हो, तुम ही ईश्वर।

मोद घन, बाँधना के साध्य साधन
विपद भय निवारण व्यर्थ न धुन
भाव अंतर्मन ही, विघ्नहरण बल
विमल अनवद्य ही, भाव सद्य चुन
नित तरणी, मत्त वात सकल तुम
तम घनघोर घटा में चिर भास्वर
तुम्हीं सत्य हो, तुम ही ईश्वर
तन क्षणभंगुर, तुम नित्य अमर।

अरावली

डॉ .कारुलाल जमड़ा, जावरा

हे अरावली !
अपनी गोद में समाये हो
तुम कितने रहस्य !
कितनी सरितायें
मचलती,उमड़ती कर रही विश्राम!
और जल महल, अठखेलियाँ करते
तुम्हारे सौन्दर्य का निशदिन कर रहे बखान।
तुम!
अर्वाचीन, अडिग,
साहस,शौर्य का सविनय मान!
क्या तुम्हे कोई कर सकता है खण्डित
ले सकता है तुम्हारे प्राण ?

कविता

ख्वाब की ताबीर में

कमलेश कुमार दीवान

अपने एक ख्वाव की ताबीर में ऐसा ही हुआ
चाहा था चांद को आफताब भी वैसा ही हुआ।

धूप और छांव का कोई फ़र्क नहीं लगता है
दिन कायनात में भी चांदनी जैसा ही हुआ।

हवाएं थी कि हम उसको पकड़ के चलते रहे
नदी में पांव रख्खे उड़ने का अंदेशा ही हुआ।

फूल कांटों से चुभे झाड़ पेड़ आसमान में थे
खेत घर बार महकते थे ये सब कैसा ही हुआ।

हम भी क्या क्या सोचते रहते हैं यहां 'दीवान'
पानी जला आग महक उठी तमाशा ही हुआ।

दृश्य...

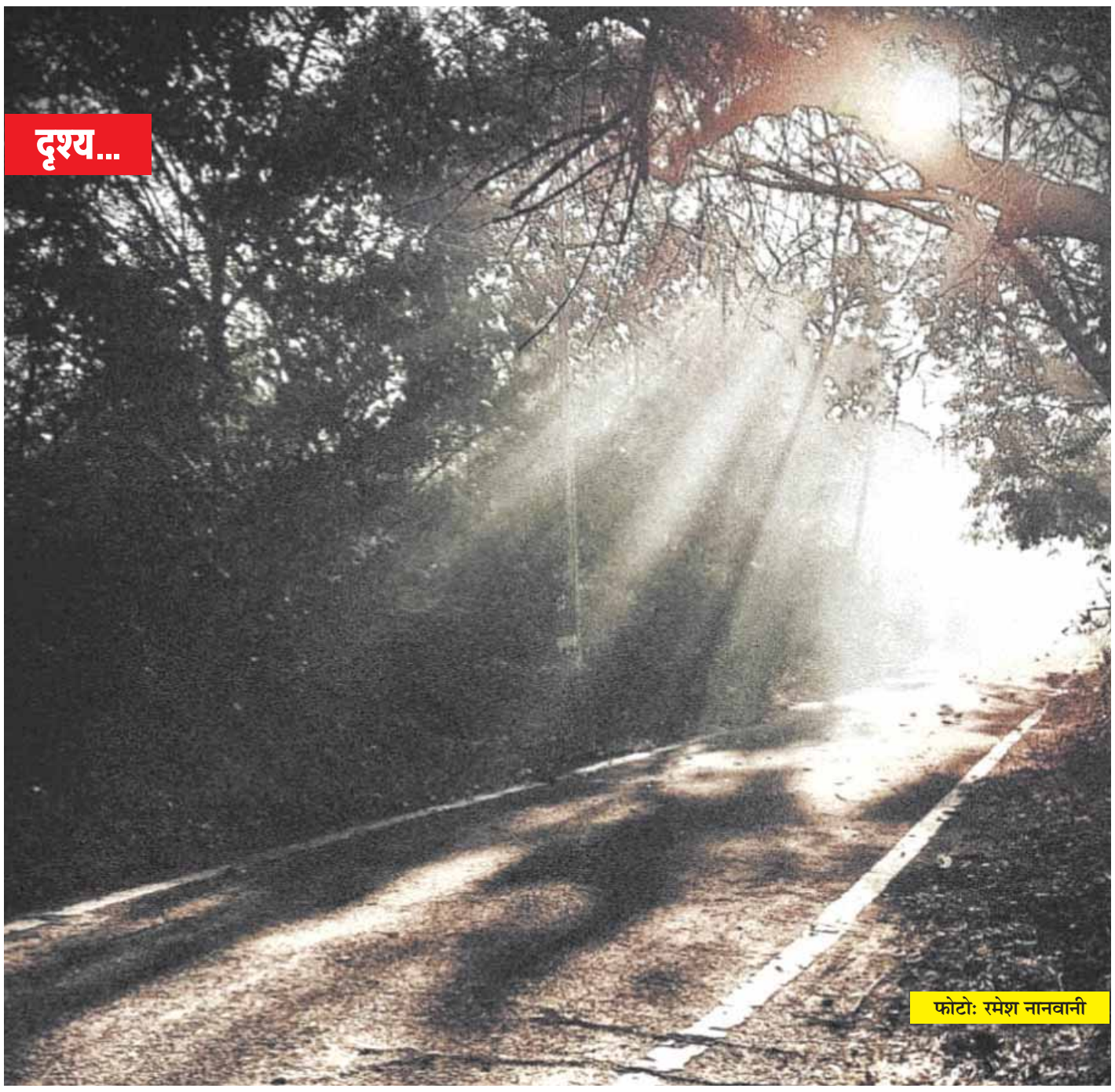

फोटो: रमेश नानवानी

बीतता साल और गहराती यादें

मनीषा मंजरी

बीतता गया साल और
यादें यूँ हीं गहराती गयीं,
समय की पगडंडियों पर,
सीखें खुद को दोहराती गयीं।
कल जी लेंगे, इस भ्रम में
दुनिया हर बार पछताती गयी,
आज को गंवा कर,
कल की यादों में दिल को डुबाती गई।
जीवन-मृत्यु के इस पुल पर,
शख्सियत खुद को भरमाती गयी,

तलाश थी खुद की और खुद को हीं
अंधेरों में छुपाती गयी।
मिली शाम की तन्हाईयाँ जहां,
सवालों की महफिलें वहाँ लगाती गयी,
और सजे भ्रम के मेले जहां,
वहाँ इच्छाओं के नशे में खुद को डुबाती गयी।
मीठे झड़ने के किनारे पर बैठ,
बादलों की आस से प्यास बुझाती गयी,
जो कंपकंपी सी आयी तो,
खुद की आशाओं में आग लगाती गयी।
शिकायतों भरे लहजे रहे,
नफरत भी आँखों में मुस्कुराती गयी,
कहीं ज़हन में संवेदनाएं दिखीं,
और कभी करुणा भी हृदय से लगाती गयी।
आकांक्षाओं भरे इस रन में,
सुदूर कहीं किसी वन में वैराग्य भी
धुन बजाती गयी,
शून्य सन्नाटे के अन्नत में,
मेरी निःशब्दिता
मुझे शब्दों से मिलाती गयी।

सीख

डॉ. श्वेता चौधरी

अगरबत्ती से जीवन का सरल, गहरा संदेश

दैनिक जीवन में इस्तेमाल की जाने वाली अगरबत्ती सिर्फ सुगंध का स्रोत नहीं है, बल्कि जीवन के कई गहरे दर्शन भी अपने भीतर समेटे हुए है। साधारण-सी दिखने वाली यह पतली डंडी हमें कई महत्वपूर्ण जीवन मूल्य सिखाती है, जिन्हें अपनाकर हम अपने व्यक्तित्व को और भी श्रेष्ठ बना सकते हैं।

अस्थायित्व का बोध कराती है यह। अगरबत्ती जलते-जैसे ही धीरेङ्कधीरे क्षीण होती जाती है, हमें यह याद दिलाती है कि जीवन में हर चीज़ क्षणिक है। सुख-दुःख, उपलब्धियाँ-असफलताएँ सब अस्थायी हैं। इसलिए वर्तमान में जीना और हर क्षण को सार्थक बनाना ही जीवन की सच्ची कला है।

अगरबत्ती की सुगंध तभी फैलती है जब वह जलाई जाती है। इसी तरह, हमारी प्रतिभाएं, क्षमताएं और ज्ञान तभी चमकते हैं जब हम उन्हें दुनिया के सामने लाते हैं। कार्य ही वह माध्यम है जो हमारे प्रभाव को पहचान दिलाता है।

धैर्य और दृढ़ता का महत्व बताते हुए एक अगरबत्ती धीरे-धीरे पूरे समय तक

जलती है और अंत में अपना उद्देश्य पूरा करती है। यह हमें सिखाती है कि बड़े लक्ष्यों को हासिल करने के लिए निरंतर प्रयास, धैर्य और दृढ़ता की आवश्यकता होती है। जल्दी हार मान लेना प्रगति के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है।

आत्म-शुद्धि और सुधार करना सिखाती है। अगरबत्ती का उपयोग अक्सर वातावरण को शुद्ध करने के लिए किया जाता है। यह हमें संकेत देती है कि मन और विचारों की शुद्धि भी उतनी ही आवश्यक है। आत्म-परीक्षण, गलतियों को स्वीकारना और निरंतर आत्म-सुधार ही एक बेहतर इंसान बनाते हैं।

आध्यात्मिक जुड़ाव बनकर रखती है। धार्मिक अनुष्ठानों में अगरबत्ती का उपयोग हमें यह याद दिलाता है कि मनुष्य अकेला नहीं है। किसी बड़े शक्ति-स्रोत, प्रकृति, ईश्वर या ब्रह्मांड से हमारा जुड़ाव हमें भीतर से मजबूत और स्थिर बनाता है।

विरासत–हमारे बाद भी कायम रहेगी। अगरबत्ती भले ही पूरी जलकर खत्म हो जाए, लेकिन उसकी सुगंध हवा में देर तक बनी रहती है। ठीक उसी तरह, हमारे कर्म, हमारे संस्कार और हमारे विचार लोगों के मन में हमारी अनुपस्थिति के बाद भी जीवित रहते हैं। यही हमारी वास्तविक विरासत होती है।

विनम्रता और स्वार्थहीनता से निहित होती है।

अगरबत्ती सुगंध देने के लिए स्वयं को जलाती है। यह निस्वार्थ सेवा की सर्वोत्तम मिसाल है। यह हमें सीख देती है कि समाज और दूसरों के लिए कुछ करना, बिना किसी अपेक्षा के, जीवन को अधिक सार्थक बनाता है।

अगरबत्ती एक वस्तु भर नहीं, बल्कि जीवन की गहरी शिक्षाओं का प्रतीक है। यदि हम इन मूल्यों को अपने जीवन में उतार लें–अस्थायित्व को स्वीकारना, धैर्य रखना, अपनी प्रतिभा का उपयोग करना, आत्म-सुधार की दिशा में बढ़ना और विनम्र बने रहना–तो हमारा जीवन भी सुगंध से भर सकता है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा अग्निबाण पब्लिकेशन, 121, देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

फ्रांस, ग्युस्ताब कुर्बे और यथार्थवादी कला का उद्भव

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

फ्रांस ऑर्नांस में एक दफन (द बुरियल एट ऑर्नांस) कलाकार ग्युस्ताब कुर्बे की एक ऐतिहासिक कृति है। कुर्बे की ही क्यों ये तो पूरे यथार्थवादी कला जगत के लिए भी ऐतिहासिक सिद्ध हुई। अब तक कला के फलक पर सिर्फ और सिर्फ राजा, महाराजा, देवी-देवता, धर्म से संबंधित कृति, उच्च कुलीन लोग ही दिखते थे या कह सकते हैं कि वही इसके अधिकारी भी थे, ऐसी मान्यता थी। कला समीक्षकों, साहित्यकारों, दर्शकों को भी यह बात हजम नहीं हो रही थी कि पहले से चली आ रही परिपाटी को ऐसे ही कैसे बदला जा सकता है। लोग अपने-अपने माध्यमों में, अपने-अपने तरीके से विरोध भी दर्ज कराने में लगे हुए थे, पर होनी को कौन टाल पाया है, होना है तो होना है। एक साधारण से गंवहीं परिवेश से कोई भी आम इंसान मृत्यु को प्राप्त होता है, सब कुछ सामान्य सा होता है उस समय भी सामान्य सा ही था पर असामान्य तब हो गया जब इस सामान्य से विषय को बिल्कुल ही सामान्य तरीके से प्रबल भाव के साथ कुर्बे ने विशाल फलक पर जगह प्रदान कर दी। नागवार गुजरा विशेष लोगों को, बदलती हुआ परिप्रेक्ष्य एक बार तो सभी को अजीब ही लगता है।

अंतिम संस्कार का यह दृश्य कुछ समय बाद तमाम विरोधों के बावजूद महान दृश्य में तब्दील हो गया और हमेशा के लिए अपने आप को इतिहास में दर्ज करा लिया। यह कदम उस समय के परिप्रेक्ष्य में एक ऐतिहासिक कदम था। एक विशाल फलक जहाँ दर्शकों की निगाहें हरदम वही देखी-देखाई परिप्रेक्ष्य, रंग, आकार आदि को देखने के आदी थे में अचानक से लगभग चालीस आम आदमी वो भी अपने-अपने दुखों और पृष्ठभूमि के साथ, क्षैतिज परिप्रेक्ष्य में दिखाई पड़ गये। हजम होने वाली बात नहीं थी। जैसा कि ग्युस्ताब कुर्बे हमेशा से कहा करता था कि मैं वही चित्रित करूँगा जो मेरे आँखों के सामने दिखाई पड़ता है, जो हमें नहीं दिखता मैं लोगों को कैसे दिखा सकता हूँ? यही कारण है कि इस कृति में कोई आदर्शीकरण, कोई काल्पनिक परिवेश, कोई अलंकरण नहीं था और ना ही धार्मिक गतिविधियों का बोलबाला भी था। जो कुछ भी था वो एकदम सामान्य सा था। वास्तविक, कठोर, सुख-दुख में भीगा हुआ सा कुछ। स्थानीय किसान, महिलाएं, बच्चे, कुत्ता, खुला, फैलावयुक्त आसमान, विशाल धरती का दूर-दूर तक फैला क्षेत्र, माहौल का शोक, लोगों के शोक के साथ बिल्कुल शोकमय नजर आ रहा था। दुख आसमान से भी झलक रहा हो जैसे। धरती तो खैर थी ही शोक में। कुर्बे के अपने साथ खेलने-कूदने, उठने-बैठने, रहने वाले लोग ही सब इस कृति में नजर आ रहे थे। विषय सामान्य के साथ ही प्रस्तुति में कोई भी आदर्श रूप नहीं अपनाया गया इस वजह से आलोचनाओं का भी सामना करना पड़ा पर कुर्बे के यात्रा पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। इस कृति को कुछ लोगों ने यथार्थवाद का घोषणापत्र कहा तो कुछ ने कला में विद्रोह के रूप में लिखा तो कुछ ने रोमांसवाद के दफन के रूप में इसको देखा। यह वही समय था जब समाजवादी विचारक फ्रुदाँ के लेखनी में भी आदर्शवाद, धर्म और विलासितावादी विचारों पर प्रहार झलक रहा था या कह सकते हैं कि दोनों एक दूसरे से प्रभावित थे और अपने-अपने कृतियों में उसी को प्रस्तुत कर रहे थे। कुर्बे के प्रसंशको में था फ्रुदाँ। समय बीतता रहा विरोध भी होता रहा पर कुर्बे विचलित होने के बजाय आगे बढ़ते रहे, चयन समिति के विरोध के बावजूद अपने चित्र दीर्घा में प्रदर्शित करते रहे और हर बार कुछ न कुछ बखेड़ा खड़ा करते रहे। जैसा कि हमेशा से होता रहा है कि किसी भी पक्ष का यदि विरोध होता है तो उसके पक्ष में भी लोग खड़े हो जाते हैं यहाँ भी बहुत से लोग कुर्बे के साथ खड़े हुए। कुर्बे निरंतर नये-नये कार्य करते हुए आगे बढ़ रहे थे। पूर्व में निर्मित एक कृति 'द स्टोन ब्रेकर' पत्थर तोड़ते दो व्यक्तियों का चित्र है। जहाँ दोनों की दशा दीन-हीन परिस्थितियों को दर्शाती है। फटे-चिथड़े कपड़े, थके-थके से चेहरे, कड़ी धूप में भी निरंतर संघर्ष को दर्शाती यह कृति समाज पर बहुत बड़ा आघात है। कृति में स्पष्ट चेहरे का न होना उसके क्षेत्र को और अधिक विस्तारित कर देती है तथा बताती है कि यह किसी एक की बात न होकर पूरे समाज का दर्द है जिसे किसी कलाकार ने अपने कैनवास पर दर्ज कर लिया है और जो हमेशा-हमेशा के लिए दर्ज हो जाएगा लोगों के दिलों में। 1848 फ्रांसीसी क्रांति के दौर से गुजरे लोग आर्थिक असंतोष और व्यथित लोगों के आक्रोश को भली भांति समझ और परख पा रहे थे। क्रांति का असर तो हुआ था पर समस्या अभी भी जस की तस ही समझ आ रही थी। 46, 47 में जो भीषण अकाल, बेरोज़गारी और मजदूरों का शोषण था बाद में भी बना रहा। मजदूरों को अपने सपने अधूरे से ही लगे और कलाकारों, साहित्यकारों को अपने-अपने हिसाब से मैदान में उतरना पड़ा 'द स्टोन ब्रेकर' इसी का एक उदाहरण है। यह चित्र श्रम के पुजारियों को एक विशाल फलक प्रदान करता है अतः उस दौर में तमाम विरोधों के बावजूद विशालता

को प्राप्त हुआ। ग्युस्ताब कुर्बे के शुरुआती कृतियों में अधिकांश उसके स्वचित्र ही हैं जो अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग पोज में बनाए हुए से हैं, कुछ और शुरुआती कृतियों में यथार्थता तो है पर चित्र का नायक या नायिका किसी विशेष प्रयोजन में कहीं डूबा सा नजर आता है बाकी पृष्ठभूमि में उपस्थित तमाम तत्वों में वास्तविकता का बहुत ही सुन्दर अंकन हुआ है। कृति 'फ्लाजे के किसान-बाजार से वापसी' में भी सब कुछ एकदम यथार्थ सा ही है। घोड़ा, गाय, भैंस सहित पीछे अस्त होते सूर्य का होना थके-हारे लोगों के घर वापसी को ही दर्शाता सा है। कृतियों में जमीन से जुड़ाव को ही दिखाया गया है। ग्रामीण रहन-सहन, परिवेश और प्रकृति को फलक प्रदान करने वाले कुर्बे के जीवन में बहुत सारी तकलीफें आयीं पर निरंतरता उनकी विशेषता बन गई थी जैसे।

समय 1854-55 के आसपास का रहा होगा। शासन नेपोलियन तृतीय का था। चारों तरफ बाहर से तो सबकुछ सामान्य, स्थिर सा ही नजर आ रहा था पर अधिकतर के भीतर कुछ था जो धीरे-धीरे रिस रहा था। असमानता, औद्योगीकरण का बोलबाला था। अमीर और गरीब के बीच की खाई लगातार बढ़ती जा रही थी। किसान मजदूर अभी भी उपेक्षित ही थे जबकि सरकारी अकादमियों में धार्मिक, ऐतिहासिक एवं पौराणिक विषयों को आदर्श, सुंदर और काल्पनिकता के पुट के साथ प्रस्तुत किया जा रहा था और साधारण से दिखने वाले किसानों आम जनमानस को फलक पर दिखाना अच्छा नहीं माना जाता था ऐसे ही समय में कुर्बे जो अब तक प्रसिद्ध हो गये थे और आम जनमानस के साथ खड़े नजर आ रहे थे अपने इन्हीं कृतियों के साथ अकादमियों में जाते, कुछ चित्र स्वीकृत होते तो कुछ को अस्वीकार कर दिया जाता था। कुछ वर्ष पूर्व लंदन में 'द ग्रेट एक्जिबिशन ऑफ 1851' प्रदर्शनी हुई थी जिसकी गूंज दूर-दूर तक सुनाई पड़ी थी और यही गूंज फ्रांस तक भी आई जिसके जवाब में नेपोलियन तृतीय ने 1855 में एक विशाल अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी का आयोजन करवाया जिसमें अकादमिक मापदण्डों को ध्यान में रखकर कृतियों का चयन होना था और जहाँ पर कुर्बे की कई कृतियों को अस्वीकार कर दिया गया। कुर्बे विरोध में पास ही (pavilion du realisme- यथार्थवाद का मंडप) नाम से अपनी खुद की प्रदर्शनी लगाई जहाँ नये-पुराने सहित चालीस के आसपास कृतियों को प्रदर्शित किया। 'दि आर्टिस्ट्स स्टूडियो' यहीं प्रदर्शित हुआ। जिसमें कुर्बे के अहंकार को भी बखूबी देखा जा सकता था। अब तक कुर्बे अहंकार प्रवृत्ति से भी ग्रस्त हो चुका था। कृति में सात वर्ष का विशेष जिक्र था। कृति को तीन भागों में बाँटा जा सकता है जहाँ बीच में स्वयं कुर्बे बड़े से कैनवास पर मंत्रमुग्ध होकर चित्र बना रहे हैं तो वहीं पीछे विवस्त्र स्त्री और सामने छोटा सा बच्चा भी भावविभोर हो बनते हुए प्राकृतिक चित्र को देख रहे हैं। वहीं बाँई ओर समाज की कठोर सच्चाई को दिखाया गया है जिसमें किसान, मजदूर, शोषित लोगों को दिखाया गया है जो कुर्बे के फलक पर समय-समय पर स्थान पाते रहे हैं जबकि दाँये तरफ बौद्धिक और पारखी लोगों को दर्शाया गया है जो इनके कृतियों पर पारखी नजर गड़ाए हुए कुछ विशेष की खोज में दिखते हैं। प्रदर्शनी पूरी तरह सफल तो नहीं रही पर लोगों को प्रभावित करने में भी पीछे नहीं रही। इसके साथ ही एक घोषणापत्र जारी किया था जहाँ ये कहा गया था कि कला का काम कल्पना गढ़ना नहीं अपितु देखी गई सच्चाई को दिखाना होता है। यहीं से एक स्पष्ट कला आंदोलन के रूप में यथार्थवाद को माना जा सकता है। कुछ लोगों ने इस प्रदर्शनी की कड़ी आलोचना की थी तो कुछ ने सराहना भी की। कुर्बे विवाद में घिरे तो आधुनिक कलाकार के रूप में स्थापित भी हुए आने वाले लोगों के लिए पथ-प्रदर्शक भी सिद्ध हुए।

आगे के कई वाद इनके इसी जिद और निडरता की वजह से संभव हो सके। ग्युस्ताब कुर्बे के जीवन को संघर्षरत जीवन कहा जा सकता है पर उनके जीवन का अंतिम दशक और भी परेशानियों से भर गया था। फ्रांस की स्थिति उथल-पुथल युक्त रही जहाँ कुर्बे के कला निदेशक बनने से लेकर आगे के और भी तमाम संघर्ष रहे जो इन्हें लगातार प्रभावित करते रहे। कारावास की सजा भी हुई। बाद में इनको स्वीटजरलैंड में रहना पड़ा जहाँ 1877 में कुर्बे का निधन हुआ। चित्र साभार गूगल से है।

आंतरिक दुनिया में सैर का माध्यम है ध्यान

डॉ लोकेन्द्र सिंह कोट

लेखक योग, ध्यान, आध्यात्म के प्रशिक्षक हैं।

ध्यान एक और प्राचीन विज्ञान है। यह एक मन-प्रशिक्षण तकनीक है जिसका पिछले दो दशकों से न्यूरोसाइंटिस्ट मानसिक स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती के लिए इसके लाभों को साबित करने के लिए अध्ययन कर रहे हैं। परंपरागत रूप से, लोग आध्यात्मिक विकास के लिए ध्यान करते हैं/ साथ ही दया, करुणा और परोपकार जैसे अपने सर्वोत्तम गुणों को सामने लाने के लिए। ध्यान के स्वास्थ्य लाभों पर हाल ही में वैज्ञानिक जांच लोगों को ध्यान करने का एक और व्यावहारिक कारण दे रही है, जिसमें तंत्रिका विज्ञान ने ध्यान के कई लाभकारी स्वास्थ्य प्रभावों को मान्य किया है। जबकि ध्यान अनुसंधान अभी भी प्रारंभिक चरण में है, अब तक के अध्ययनों से ध्यान के लाभों की एक लंबी सूची का पता चलता है जो सभी को आकर्षित कर रहे हैं/ इन अध्ययनों को रेंडम नियंत्रित परीक्षणों और FMRI स्कैनर और EEG जैसे वैज्ञानिक उपकरणों के साथ अनुभवजन्य रूप से सिद्ध किया गया है।

ध्यान के वैज्ञानिक लाभ- ध्यान पर हाल ही में हुए अनुसंधान हमें बताते हैं कि ध्यान के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य लाभ सत्यापित होकर नए आयाम प्रस्तुत कर रहे हैं

रक्तचाप कम करता है- ध्यान करने से रक्तचाप कम होता है, सूजन कम होती है, सर्कैडियन लय नियमित होती है और ग्लूकोज चयापचय स्थिर होता है। दो समूहो पर एक अध्ययन में पाया गया कि आठ सप्ताह तक ध्यान करने से नाइट्रिक ऑक्साइड के स्तर में वृद्धि हुई - वह अणु जो रक्तचाप को नियंत्रण में रखने में मदद करता है - जबकि जिस समूह ने ध्यान नहीं किया था का स्तर वही रहा।

ध्यान का यह लाभ संभावित रूप से जीवन रक्षक है, क्योंकि उच्च रक्तचाप दुनिया में मृत्यु का एक प्रमुख कारण है। अपने रक्तचाप को कम करके आप दिल के दौरे या स्ट्रोक से मृत्यु के जोखिम को काफी हद तक कम कर सकते हैं।

खुशी में सुधार करता है- वैज्ञानिक अध्ययनों ने स्थापित किया है कि खुशी का सबसे बड़ा कारण ध्यान ही है। ध्यान हमें वर्तमान में लाता है और अपनी प्रत्येक गतिविधि के प्रति जागरूक करता है, ध्यान हमारे मन को प्रशिक्षित करता है। दूसरी ओर, मन-भटकना, खुशी के घटते स्तरों से जुड़ा हुआ है। यह जांचने के लिए एक अध्ययन किया गया कि क्या ध्यान वास्तव में मन-भटकने को कम करता है और इसलिए समग्र खुशी बढ़ाता है। परिणामों से पता चला कि मन-भटकने के लिए जिम्मेदार मस्तिष्क के हिस्से के भीतर गतिविधि को काफी कम कर दिया, जबकि जिन्होंने ध्यान नहीं किया था उसमे वह अपरिवर्तित रहा। ध्यान करने से न केवल ध्यान के दौरान मन की भटकन कम होती है, बल्कि यदि कोई नियमित ध्यान का अभ्यास करता है तो इन प्रभावों को बनाए रखा जा सकता है और मजबूत किया जा सकता है।

अवसाद, तनाव और चिंता के लक्षणों को कम करता है- अध्ययन बताते है कि कैसे ध्यान तनाव और चिंता को कम कर सकता है, जिससे अवसाद कम होता है। दो प्राथमिक मस्तिष्क क्षेत्र जिन्हें न्यूरोसाइंटिस्ट अवसाद से जोड़ते हैं, वे हैं औसत दर्जे का प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स (मी-सेंटर) और एमिग्डाला (डर का केंद्र)। औसत दर्जे का प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स तनाव और चिंता पर प्रतिक्रिया करता है, जो परिणामस्वरूप एमिग्डाला को तनाव हार्मोन कोर्टिसोल जारी करने का संकेत देता है। ध्यान तनाव और चिंता के प्रति आपकी प्रतिक्रिया को कम करके इस संबंध को तोड़ता है, जो फिर एमिग्डाला को कम कोर्टिसोल जारी करने का संकेत देता है, जिससे तनाव का स्तर नियंत्रण में रहता है।

ध्यान के अभ्यास को माध्यम से व्यवस्थित रूप से तनाव कम करने के लिए माना गया था, लेकिन बाद में यह साबित हो गया है कि यह अवसाद, चिंता, पुराने दर्द, कैंसर, मधुमेह, उच्च रक्तचाप और प्रतिरक्षा विकारों सहित कई पुरानी बीमारियों से लड़ने में भी सकारात्मक प्रभाव डालता है।

ध्यान और स्मृति में सुधार करता है- एक अन्य अध्ययन में पाया गया कि 2 सप्ताह के ध्यान के बाद विचलित करने वाले विचारों में कमी आई, साथ ही दिमाग के भटकने से जुड़े क्षेत्रों की गतिविधि में भी कमी आई। ध्यान अभ्यास से ध्यान और स्मृति में सुधार केवल ध्यान के दौरान या उसके तुरंत बाद के क्षणों तक ही सीमित नहीं है। नियमित ध्यान अभ्यास से, व्यक्ति पूरे दिन या पूरे सप्ताह इन लाभों को बनाए रख सकता है।

आत्म-नियंत्रण और व्यसनकारी आदतों में सुधार करता है- ध्यान धूम्रपान की लालसा को कैसे कम कर सकता है, इसकी जांच के माध्यम से, मनोवैज्ञानिकों ने पाया कि ध्यान आत्म-नियंत्रण क्षमता में सुधार कर सकता है और इसलिए नशे की लत को कम कर सकता है। ध्यान के बाद, लत से संबंधित मस्तिष्क के क्षेत्रों में गतिविधि कम हो गई। कई व्यसन नकारात्मक भावनाओं और तनाव से संबंधित हैं, इसलिए ध्यान एक उपयोगी उपकरण है क्योंकि यह इन दो अनुभवों को विनियमित करने में भी मदद कर सकता है।

इस अध्ययन का एक दिलचस्प पहलू यह था कि प्रतिभागियों को धूम्रपान छोड़ने में कोई दिलचस्पी नहीं थी और न ही उनसे ऐसा करने के लिए कहा गया था। ध्यान के साथ उनकी धूम्रपान की आदतें और लालसा स्वाभाविक रूप से कम हो गई। कुछ प्रतिभागियों को तो यह भी पता नहीं चला कि वे लगातार ध्यान करने के बाद कम धूम्रपान कर रहे थे।

पुराने दर्द के लक्षणों को कम करता है- ध्यान का अभ्यास पुराने दर्द को कम करने से संबंधित मस्तिष्क क्षेत्रों का विस्तार कर सकता है। दिलचस्प बात यह है कि ध्यान के माध्यम से संवेदनशीलता को कम करने से प्रतिभागियों को दर्द को अनदेखा करने के लिए नहीं कहा जाता है, बल्कि दर्द के प्रति सचेत जागरूकता और खुलेपन को विकसित करके कम किया जाता है। यह काम इसलिए करता है क्योंकि बचने से चिंता बढ़ती है, जिससे दर्द और अन्य नकारात्मक स्वास्थ्य और मानसिक स्थितियों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ जाती है। इसलिए दर्द के प्रति सचेत खुलापन वास्तव में दर्द को कम कर सकता है।

क्रोनिक दर्द के लिए सहायता के रूप में ध्यान का उपयोग करने का एक लाभ यह है कि यह दर्द को दबाने का काम नहीं करता है - दर्द निवारक दवाओं से विपरीत यह दर्द के मूल तंत्रिका संबंधी कारणों को दूर करने का एक दीर्घकालिक समाधान है।

नींद में सुधार करता है- लोगों को कई कारणों से नींद न आने की समस्या होती है, लेकिन दो सामान्य कारण हैं, एक मानसिक स्वास्थ्य और दूसरा पुराना दर्द। ध्यान करने से मानसिक स्वास्थ्य में मदद मिलती है - खुशी बढ़ती है और तनाव और चिंता कम होती है

एक बार फिर, कुछ स्थितियों में, ध्यान दवा से ज़्यादा उपयोगी हो सकता है क्योंकि यह केवल लक्षणों को दबाने के बजाय नींद न आने के मूल कारण को संशोधित करता है। चूँकि कई नींद की दवाओं से अत्यधिक नशे की लत भी हो सकती हैं, इसलिए ध्यान एक स्वस्थ विकल्प है जो कई अन्य स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता है और प्रतिकूल दुष्प्रभावों के बिना पूरे जीवनकाल तक इसका अभ्यास किया जा सकता है।

नियमित ध्यान अभ्यास मस्तिष्क पर प्रभाव डालता है- नियमित ध्यान अभ्यास से मस्तिष्क पर सबसे बड़ा प्रभाव न्यूरोप्लास्टिसिटी में वृद्धि है। न्यूरोप्लास्टिसिटी नए तंत्रिका मार्गों के निर्माण के माध्यम से हमारे मस्तिष्क की संरचना और संगठन को बदलने की क्षमता है। यह व्यायाम, आदत और ध्यान के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है, हार्वर्ड के पूर्व छात्र डॉ. रिची डेविडसन जैसे वैज्ञानिकों ने ध्यान और न्यूरोप्लास्टिसिटी के अध्ययन में अग्रणी भूमिका निभाई है। मानसिक स्वास्थ्य और ध्यान अभ्यास के बीच संबंध को प्रदर्शित करते हुए, डेविडसन ने दिखाया है कि लोग खुशी और करुणा को प्रशिक्षित कौशल के रूप में सीख सकते हैं, ठीक वैसे ही जैसे आप संगीत वाद्ययंत्र बजाना, खाना बनाना या बास्केटबॉल या गोल्फ जैसे खेल में सुधार करना सीख सकते हैं। अध्ययनों से पता चला है कि ध्यान कार्यक्रमों के माध्यम से, लोग अपनी न्यूरोप्लास्टिसिटी बढ़ाते हैं, मस्तिष्क को स्वयं बदलते हैं जिससे वे खुद को, दूसरों को और दुनिया को देखने के तरीके को सकारात्मक रूप से बदल देते हैं।

ग्रे मैटर की वृद्धि करता है- कई अध्ययनों में पाया गया है कि नियमित ध्यान अभ्यास से मस्तिष्क के फ्रंटल कॉर्टेक्स में अधिक ग्रे मैटर बनता है , जो स्मृति और कार्यकारी निर्णय लेने के लिए जिम्मेदार मस्तिष्क का क्षेत्र है। मस्तिष्क के इस हिस्से में अधिक ग्रे मैटर से स्मृति में वृद्धि होती है और भावनाओं, सामाजिक कौशल, आवेगों और मोटर कार्यों पर बेहतर नियंत्रण होता है । तंत्रिका वैज्ञानिकों ने यह भी पाया कि मस्तिष्क के अन्य क्षेत्रों में ग्रे मैटर का मोटा होना मानसिक स्वास्थ्य में वृद्धि से जुड़ा है तथा यह खुशी के स्तर का एक महत्वपूर्ण कारक है।

अमिग्डाला के आकार में कमी लाता है- एक अन्य अध्ययन में पाया गया कि ध्यान करने से अमिग्डाला का आकार कम हो सकता है , जो मस्तिष्क का वह क्षेत्र है जो चिंता, भय और तनाव के लिए जिम्मेदार है।

मस्तिष्क का संरक्षण करता है- पहले बताए गए ग्रे मैटर की वृद्धि से मस्तिष्क के ऊतकों के संरक्षण में भी सुधार होता है। हाल ही में किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि लंबे समय तक ध्यान करने वालों का मस्तिष्क ध्यान न करने वालों की तुलना में 'बेहतर संरक्षित' था। जिन लोगों का मस्तिष्क 'उम्र को मात देने वाला' होता है, उन्हें बेहतर याददाश्त, मानसिक स्वास्थ्य, खुशी के स्तर और भावनाओं, सामाजिक कौशल, आवेगों और मोटर कार्यों पर बेहतर नियंत्रण का लाभ लंबे समय तक मिलता है ।

डिफ़ॉल्ट मोड नेटवर्क (DMN) में गतिविधि कम हो जाती है- यह नेटवर्क - जिसे 'बंदर दिमाग' कहा जाता है - तब सक्रिय होता है जब हमारा मन भटकता है। वर्तमान क्षण से अलग होने की यह स्थिति दुख की ओर ले जाती है। न्यूरोप्लास्टिसिटी पर ध्यान के प्रभाव से आपके मस्तिष्क में होने वाले परिवर्तन मन-भटकने को कम कर सकते हैं और ध्यान को बेहतर बना सकते हैं, जिससे समग्र खुशी और संतुष्टि में सुधार हो सकता है।

द शम्सुद्दीन ग्रेट फैमिली- एक अलग ढब की फिल्म

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे,

लेखक वेबसाइट ई- अंतर्भव के प्रबंध संचालक हैं।

बहुचर्चित फिल्म - ' पीपली लाइव ' के निर्देशक की एक और पुरअसर और मन की गहराइयों तक उतर जाने वाली फिल्म आई है - ' द ग्रेट शम्सुद्दीन फैमिली '। वर्ष 2010 की फिल्म-'पीपली लाइव ', किसानों की खुदकुशी की त्रासदी और मीडिया के तमाशे के बीच बनी फिल्म थी जो एक तरह की कल्ट फिल्म बन गई थी । उस फिल्म ने एकबारगी फिल्मों के मुहावरे को ही बदल दिया था ।

पन्द्रह साल बाद उस फिल्म की निर्देशक अनुषा रिजवी जो एक नई फिल्म लेकर आई हैं- ' द ग्रेट शम्सुद्दीन फैमिली ' । यह फिल्म पीपली लाइव से बिल्कुल अलग है, लेकिन लगभग उसी हल्की-फुल्की हँसी और विडम्बना बोध से लैस है और वैसी ही चुभन पैदा करने वाली भी है । असल में इसे यदि एक अलग ढब की फिल्म कहें तो वह अतिशयोक्ति नहीं होगी ।

एक परिवार के बारह घण्टों की कहानी पर बनी यह फिल्म गत शुक्रवार, 12 दिसम्बर को सीधे ओटीटी प्लेटफॉर्म जियो हॉटस्टार पर रिलीज हुई। फिल्म आम आदमी की जिन्दगी के एक आम से लगने वाले दिन से शुरू होती है, लेकिन देखते ही देखते वह एक खास घरेलू अफरा-तफरी में बदल जाती है। पूरी फिल्म एक ही दिन में, एक अपार्टमेंट के अन्दर सेट की गई है। यह एक फैमिली चैंबर-स्टाइल ड्रामा-कॉमेडी है, जिसकी कहानी के केंद्र में बानी (कृतिका कामरा) हैंउसका परिवार अराजक है, लेकिन आपस में जुड़ा हुआ है। इसमें मजबूत इरादों वाली औरतें हैं, जो बानी के घर पर कई सारी समस्याओं के साथ आती हैं। बानी, परिवार की भरोसेमंद बड़ी बेटी है - जो पूरे घर को सम्भालकर रखती है। फिर भी, वह उन समस्याओं के लिये तैयार नहीं थी जो कुछ ही घण्टों में उसके लिविंग रूम में घर बना लेती है ।

पीपली लाइव फेम अनुषा रिजवी ने इस फिल्म में शम्सुद्दीन परिवार की महिलाओं को लेकर एक कुशल, लेकिन नाटकीय लय के साथ फिल्म की पटकथा की बुनावट की है । पटकथा में विभिन्न चरित्रों , मुख्य रुप में महिला पात्रों के आपसी मेलजोल की अन्तरंगता है, हास्य भी है, टकराव भी, गर्मजोशी भी और पीढ़ीगत तनाव भी। घरेलू उथल-पुथल के बीच अल्पसंख्यक समुदायो द्वारा महसूस की जाने वाली बेचैनी भी है। डर और सामाजिक जाँच की एक अंदरूनी भावना भी है , जो बातचीत और छोटे-छोटे चरित्रों के माध्यम से धीरे-धीरे प्रकट होती है।यह पूरी फिल्म एक फ्लैट के भीतर घटित होती है. कायदे से यह फ्लैट उस भारत का रूपक है जिसे इन दिनों बदलने की कोशिश चल रही है । यह जुमला इन दिनों खूब सुना जा रहा है कि जो नया भारत है वह घर में घुस कर मारता है. लेकिन इस फिल्म में जो भारत है, वह घर में आकर अपनी उलझनें सुलझाता है, अपने जीवट, अपनी जिंदादिली के सहारे समस्याओं पार पाता है।

बानी की छोटी चचेरी बहन इरम (श्रेया धनवन्तरी) ने लापरवाही में एक आदमी को बड़ी रकम दे दी है, जो अब उसे इग्नोर कर रहा है। ठीक उसी समय जब उनकी माँओं ने उमराह का प्लान पक्का कर लिया है। अब उन्हें उस पैसों की सख्त जरूरत है। उसी समय, एक चचेरा भाई जोहेब (निशांक वर्मा) एक हिंदू लड़की के साथ भागकर वहां पहुँच जाता है, जो उससे तुरन्त शादी करने के लिए तैयार है। बानी के आस-पास और भी रिश्तेदार और जान-पहचान वाले घूमते रहते हैं, हर कोई पहले से ही समस्याओं से उबल रहे लिविंग रूम में अपनी-अपनी तरह की मुसीबत डाल रहे है। बानी की जिंदगी में यह सब तब हो रहा है, जब उसके लिए ये 12 घण्टे बहुत मायने रखते हैं। उसके करियर के लिए ये सबसे अहम घंटे हैं, जो अब परिवार और रिश्तेदारों की समस्याओं की भेंट चढ़ रह हैं।

फिल्म में पीढ़ियों के सोच में अन्तर ,लड़कियों के टूटे रिश्ते हैं और नए ब्वाय फ्रेंड भी हैं जहाँ धर्म अहमियत नहीं रखता । फ्लैट में एक अंदेशा बाहर का भी है. यानी एक भारत जो इस फ्लैट में बन रहा है, उसके सामने उस दूसरे भारत के आने का अंदेशा है जो इन दिनों बहुत आक्रामकता के साथ जीने का आदी होता जा रहा है । इस दूसरे भारत में पहचान का आग्रह दुराग्रह में बदल रहा है, प्रेम विवाह लव-जिहाद करार दिए जा रहे है और शक-शुबहे का एक माहौल बनाया जा रहा है । अनुशा रिजवी की फिल्म इन सब प्रवृत्तियों की कोई सख्त आलोचना नहीं करती. वह बस जैसे एक खिलखिलाता आईना रख देती है- याद दिलाती हुई कि असल में तुम यह हो और यह हुए जा रहे हो ।इक्कॉमिक दृश्यों के बीच कसक को, व्यंग्य के बीच विडम्बना को पकड़ना उन्हें खूब आता है ।

आज पुण्यतिथि

गौरव अवस्थी

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदीः ऐसो को उदार हिन्दी जग माहीं..

बालमुकुंद गुप्त से अस्थिरता और अनस्थिरता शब्द पर वर्षों चला विवाद हो या नागरी प्रचारिणी सभा की खोजपूर्ण रिपोर्ट को लेकर बाबू श्यामसुंदर दास से हुआ मतभेद या सरस्वती में लेख न छपने पर बीएन शर्मा से हुई लट्ठमलट्ठ। आमतौर पर उनकी छवि आमतौर पर कलहप्रिय, क्रोधी, घमंडी और तुनक मिजाज के तौर पर स्थापित करने की समय- समय पर कोशिशें की गईं लेकिन इन विवादों के अंत सौहार्दपूर्ण एवं सौजन्यता के साथ ही हुए। बालमुकुंद गुप्त से चले विवाद का अंत आचार्य के चरणों में सिर रखने से हुआ। आचार्य द्विवेदी ने भी उन्हें गले लगा कर सहृदयता दिखाई।

बोलियों में बंटी हिंदी भाषा को परिमार्जित करके भारतेन्दु हरिश्चंद्र द्वारा प्रारंभ किए आधुनिक खड़ी बोली हिंदी आंदोलन को सफलता के शिखर पर स्थापित करने में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है। अपनी अथक मेहनत के बल पर उन्होंने हिंदी खड़ी बोली में कई संपादक लेखक कवि तैयार किए।आचार्य द्विवेदी को भाषा और व्याकरण में किसी भी तरह की भाषाई अशुद्धि और व्याकरण की अराजकता अस्वीकार थी। हिंदी की इस प्रतिष्ठा के लिए ही अपने समय के प्रतिष्ठित साहित्यकारों से आचार्य द्विवेदी का वाद-विवाद और प्रतिवाद होता रहा। कुछ विवाद तो आधुनिक हिंदी साहित्य में आज भी अमिट हैं।

बालमुकुंद गुप्त से अस्थिरता और अनस्थिरता शब्द पर वर्षों चला विवाद हो या नागरी प्रचारिणी सभा की खोजपूर्ण रिपोर्ट को लेकर बाबू श्यामसुंदर दास से हुआ मतभेद या सरस्वती में लेख न छपने पर बीएन शर्मा से हुई लट्ठमलट्ठ। आमतौर पर उनकी छवि आमतौर पर कलहप्रिय, क्रोधी, घमंडी और तुनक मिजाज के तौर पर स्थापित करने की समय- समय पर कोशिशें की गईं लेकिन इन विवादों के अंत सौहार्दपूर्ण एवं सौजन्यता के साथ ही हुए। बालमुकुंद गुप्त से चले विवाद का अंत आचार्य के चरणों में सिर रखने से हुआ। आचार्य द्विवेदी ने भी उन्हें गले लगा कर सहृदयता दिखाई।

नागरी प्रचारिणी सभा के काम की आलोचना खोजपूर्ण रिपोर्ट छपने पर बाबू श्यामसुंदर दास से पैदा हुए मतभेद के बाद सभा ने सरस्वती से अपने संबंध समाप्त कर लिए। आचार्य द्विवेदी ने 'अनुमोदन का अंत' शीर्षक से लेख लिखा तो सभा के कार्य से बाहर गए पं. केदारनाथ पाठक बहुत नाराज हुए और लौटने पर सीधे कानपुर आचार्य द्विवेदी के पास पहुंचकर अपनी नाराजगी प्रकट की। कोमल हृदय आचार्य द्विवेदी ने उन्हें ससम्मान आसन दिया और घर के अंदर से मिठाई-जल लेकर आए और साथ में एक लाठी भी। शिष्टाचार के बाद उन्होंने पं. पाठक को प्रतिवाद पूरा करने के लिए लाठी देते हुए कहा-'आपकी लाठी और मेरा सर..'। इस पर पं. पाठक बहुत लज्जित हुए और वह हमेशा के लिए आचार्य जी के भक्त हो गए। इस विवाद का अंत भी श्यामसुंदर दास द्वारा 'भारत मित्र' में द्विवेदी जी की उदारता पर लिखे गए लेख के साथ हुआ। सौजन्यता का इससे बड़ा उदाहरण और क्या होगा कि बाबू श्याम सुंदर दास द्वारा स्थापित नागरी प्रचारिणी सभा ने आचार्य द्विवेदी के सम्मान में 1933 में 'अभिनंदन ग्रंथ' प्रस्तुत किया और आचार्य द्विवेदी ने अपने संपादन से जुड़ी महत्वपूर्ण सामग्री और लाइब्रेरी की हजारों पुस्तकें सभा को ही दान में दीं।

भाषा एवं व्याकरण सुधार के आंदोलन में ऐसे अनेक विवादों के दृष्टांत आधुनिक हिंदी साहित्य के इतिहास में दर्ज हैं, जिनका पटाक्षेप सौहार्दपूर्ण वातावरण में हुआ। यह इसलिए संभव हुआ कि आचार्य द्विवेदी और संबंधित पक्ष के बीच विवाद के कारण हिंदी भाषा की शुद्धता थी न कि व्यक्तिगत। अपना लेख सरस्वती में न छपने पर बीएन शर्मा ने अवश्य आलोचनापूर्ण लेख में आचार्य द्विवेदी पर व्यक्तिगत आक्षेप किए लेकिन क्षमा प्रार्थना के बाद आचार्य द्विवेदी ने इस विवाद का भी अंत सौजन्यता के साथ कर दिया। ऐसा ही एक प्रकरण महामना पं. मदन मोहन मालवीय के अनुज कृष्णकांत मालवीय के साथ भी हिंदी साहित्य में दर्ज है।

रेलवे की 200 प्रति माह की नौकरी छोड़कर 50 प्रति माह में 'सरस्वती' का संपादन स्वीकार करने वाले आचार्य द्विवेदी का इंडियन प्रेस के संस्थापक बाबू चिंतामणि घोष से प्रथम परिचय उनके ही प्रेस से प्रकाशित हिंदी रीडर की कड़ी आलोचना के साथ हुआ था लेकिन फिर भी घोष बाबू ने आचार्य द्विवेदी को सरस्वती का संपादक नियुक्त करना तय किया। उनके संपादक नियुक्त होने पर कुछ साहित्यकारों ने घोष बाबू से कहा कि यह मनुष्य बहुत घमंडी है। तुनुक मिजाज है। इसे संपादक बनाकर बड़ी भूल कर रहे हो। उससे एक दिन भी नहीं पटेगी लेकिन उन्होंने किसी भी आलोचना को कान न देकर आचार्य द्विवेदी को संपादन का दायित्व सौंपा। 18 वर्षों तक सरस्वती के संपादन कार्यकाल में आचार्य द्विवेदी और घोष बाबू में घड़ी भर की अनबन नहीं हुई। सरस्वती के प्रकाशक और सेवक संपादक के बीच के सरस संबंध आज भी मुद्रक-प्रकाशक एवं संपादक के बीच सरस संबंधों का आदर्श उदाहरण है।

बात नवंबर 1905 की है। छतरपुर के राजा ने आचार्य द्विवेदी जी से कहा कि आप प्रतिवर्ष एक अच्छे अंग्रेजी ग्रंथ का अनुवाद किया कीजिए। पारिश्रमिक के रूप में मैं आपको 500 दिया करूंगा। उन्होंने 1907 में हर्बर्ट स्पेंसर की 'एजुकेशन' पुस्तक का अनुवाद 'शिक्षा' के नाम से किया और राजा को पत्र लिखा। अपनी बात से मुकरते हुए राजा ने पारिश्रमिक के रूप में केवल ?25 ही देने की बात कही। इस पर नाराज हुए आचार्य द्विवेदी ने राजा को कड़ा पत्र लिखकर अपनी आपत्ति प्रकट करने से परहेज नहीं किया।

जन्म ग्राम दौलतपुर (रायबरेली) की पाठशाला के एक शिक्षक एक पद का गलत अर्थ बता रहे थे। बालक द्विवेदी ने शिक्षक को टोका और सही अर्थ बताया लेकिन शिक्षक अपनी गलती स्वीकार करने को तैयार नहीं थे। द्विवेदी जी के प्रतिवाद करने पर वह पंडितराज संजीवन के अर्थ को प्रमाणिक मानने को तैयार हुए। तब द्विवेदी जी पंडितराज के घर गए और सही अर्थ लिखाकर लाए। उन्होंने भी द्विवेदी जी के ही अर्थ का समर्थन किया। फिर शिक्षक को बालक द्विवेदी के सामने अपनी गलती स्वीकार ही करनी पड़ी।

दरअसल, बचपन से ही स्वाध्यायी आचार्य द्विवेदी का गलत को गलत कहने का स्वभाव था। गलत को गलत कहने में तनिक भी हिचक न होने का यह स्वभाव आचार्य द्विवेदी में अंतिम समय तक विद्यमान रहा। किसी के आगे झुकना उन्होंने स्वीकार नहीं किया। सामने वाला कोई भी हो या कितना भी बड़ा हो। इसी स्वभाव के बल पर वह आधुनिक हिंदी खड़ी बोली को गद्य और पद्य दोनों की भाषा बनाने में सफल हो सके।

गुरु गोविंद सिंह बस्ती का हिंदू सम्मेलन 4 जनवरी को

बैठक में व्यवस्थाओं के लिए व्यवस्था प्रमुख नियुक्त

धार। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में हिंदू उत्सव समिति गुरु गोविंद सिंह बस्ती आयोजन समिति की बैठक समिति संयोजक विक्की जैन,सहसंयोजक नरेश राजपुरोहित एवं कैलाश पिपलोदिया की उपस्थिति में धारेश्वर मंदिर प्रांगण स्थित कार्यालय में संपन्न हुई। बैठक में हिंदू सम्मेलन की तैयारी को लेकर व्यापक चर्चा की गई । बैठक में सामूहिक संवाद कर तय किया गया कि आगामी 4

जनवरी को धारेश्वर मंदिर प्रांगण में हिंदू सम्मेलन आयोजित होगा जिसमें मंचीय कार्यक्रम और मुख्य वक्ता के उद्बोधन पश्चात हिंदू समाज का सामूहिक भोज का आयोजन कार्यक्रम स्थल पर किया जाएगा। जिसमें 14 बस्तियों की सहभागिता रहने वाली है। इसके लिए भी बस्तीसः टोली बनाई गई है। समिति द्वारा घर-घर संपर्क अभियान चलाकर पीले चावल देकर आमंत्रण प्रक्रिया पूर्ण करने, एक दिन पूर्व रैली का आयोजन, प्रत्येक घरों में भगवा पताका लगवाने आदि कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की गई। बैठक में पंडाल, मंच व्यवस्था, पार्किंग व्यवस्था, जल व्यवस्था, प्रचार प्रसार, प्रेस आदि अन्य व्यवस्थाओं के लिए के लिए व्यवस्था प्रमुख भी नियुक्त किए गए । शुक्रवार को बस्ती के मोहल्ला समितियों की सामूहिक बैठक के पूर्व कार्यालय का शुभारंभ भी किया गया। जिसमें आयोजन समिति के सदस्यों के साथ ही मोहल्ला समितियां भी मौजूद रही। जानकारी हिंदू उत्सव समिति गुरु गोविंद सिंह बस्ती के मीडिया प्रभारी ज्ञानेंद्र त्रिपाठी ने दी।

मुख्यमंत्री के धार के प्रस्तावित कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर प्रभारी कलेक्टर ने किया निरीक्षण

धार। धार में 23 दिसंबर को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के प्रस्तावित कार्यक्रम की तैयारियों के संबंध में प्रभारी कलेक्टर एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अभिषेक चौधरी एवं एसपी ने प्रशासनिक अधिकारियों के साथ हेलीपेड एवं कार्यक्रम स्थल में की जा रही तैयारियों का निरीक्षण किया।

निर्धारित कार्यक्रम स्थल पहुंचकर प्रभारी कलेक्टर ने यहां मुख्य मंच निर्माण, सुरक्षा व्यवस्था, पार्किंग व्यवस्था, बैरिकेटिंग, व्हीआईपी बैठक व पार्किंग व्यवस्था, विभागीय स्टॉल, सहित अन्य व्यवस्था के लिए अधिकारियों के साथ आवश्यक चर्चा की। निरीक्षण के दौरान श्री चौधरी ने कहा कि जिन अधिकारियों को कार्यक्रम के लिए दायित्व सौंपे गये हैं संबंधित अधिकारी उन्हें समय-सीमा में पूर्ण कर नोडल अधिकारी को समय पर अवगत कराना सुनिश्चित करें।

प्रभारी कलेक्टर द्वारा कार्यक्रम स्थल पर अग्निशमन, पेयजल आदि के समुचित प्रबंध करने, सांस्कृतिक कार्यक्रम स्थल एवं प्रदर्शनी स्थल का भी निरीक्षण कर उचित निर्देश दिए। इस दौरान पुलिस अधीक्षक मयंक अवस्थी, अपर कलेक्टर संजीव केशव पांडेय एवं संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

श्रद्धेय अटलजी की जन्म शताब्दी वर्ष एवं वीर बाल दिवस पर पर होंगे विभिन्न कार्यक्रम

नवनियुक्त जिला पदाधिकारियों व मंडल अध्यक्षों की जिला कामकाजी बैठक संपन्न

धार। भारतीय जनता पार्टी जिला पदाधिकारियों व मंडल अध्यक्षों की महत्वपूर्ण बैठक धार में आयोजित की गई। बैठक में आगामी संगठनात्मक कार्यक्रम भारत रत्न श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी की जन्म शताब्दी एवं वीर बाल दिवस के आयोजन को लेकर विस्तार से चर्चा की गई। बैठक में भाजपा के वरिष्ठ नेता पूर्व केंद्रीय मंत्री विक्रम वर्मा,केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर, भाजपा जिला अध्यक्ष महंत निलेश भारती, धार विधायक नीना वर्मा, जिला पंचायत अध्यक्ष सरदार मेडा, किसान मोर्चा प्रदेश महामंत्री दिलीप पटोंदीया, पूर्व जिलाध्यक्ष मनोज सोमानीं, पूर्व विधायक वेलसिंह भूरिया व मुक़ामसिंह निगवाल अतिथि रुप में मंचासीन थे।

कार्यक्रम में अतिथियो का दुपट्टा पहनाकर व मोमेंटो भेंटकर स्वागत किया गया। इसके बाद जिला कार्यकारिणी में शामिल नवीन पदाधिकारियों का मंडल अध्यक्षों द्वारा स्वागत किया गया।

पूर्व केंद्रीय मंत्री विक्रम वर्मा ने कहा की भाजपा निष्ठावान एवं ईमानदार पार्टी है, जिसकी बदौलत आज यह प्रदेश-देश तथा विश्व की सबसे बड़ी पार्टी बनकर सामने आई है। एक समय था जब भाजपा में मात्र दो ही सांसद थे। दो सांसदों से विश्व की सबसे बड़ी पार्टी बनने का सफर संघर्षों से भरा हुआ है। जिसमें ईमानदार, कर्मठ, निष्ठावान कार्यकर्ताओं की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

आज पार्टी केंद्र एवं देश के विभिन्न प्रांतों में अंतिम व्यक्ति को लाभ पहुंचाने की योजनाओं के माध्यम से जनजन को लाभान्वित कर रही है। भाजपा की रीढ़ कार्यकर्ता हैं जो हर बूथ पर रहकर जमीनी स्तर से पार्टी को जिताते हैं। इसलिए हम सभी यह संकल्प लें कि अपना बूथ मजबूत करेंगे और पार्टी को शिखर तक ले जाएंगे। हम पुराने जमाने मे सायकिल से भ्रमण कर कार्यकर्ताओ से मिलकर संगठन का काम करते

थे। न वाहन की सुविधा थी और न ही रहने व खाने पीने की। पर उस समय के नेताओ में संगठन मजबूती का भाव था। यही कारण है कि हम सबसे बड़ा संगठन बनकर उभरे।

केन्द्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर ने बैठक में कुशाभाऊ ठाकरे जी को याद करते हुए कहा कि देश प्रदेश में जो गांव-गांव तक संगठन दिखाई देता है तो उसके पीछे का तप, परिश्रम ठाकरे जी का था।

केंद्र में मोदी जी और राज्य में डॉ मोहन यादव की डबल इंजन' सरकार की सराहना करते हुए कहा कि केंद्र और प्रदेश सरकारें मिलकर गांवों को विकास का केंद्र बना रही हैं। गरीब कल्याण, किसान सम्मान, आवास, उज्ज्वला, मुफ्त राशन और स्वास्थ्य जैसी योजनाओं के माध्यम से समाज के अंतिम व्यक्ति तक लाभ पहुंचाया जा रहा है। शासन की हर योजनाओं की जानकारी अंतिम पंक्ति के व्यक्ति तक पहुंचे व लाभ मिले। इसकी जिम्मेदारी हमे उठानी होगी। हमे आम लोगो को पार्टी से जोड़कर संगठन को मजबूत बनाना है।

बैठक को संबोधित करते हुए भाजपा जिला अध्यक्ष महंत निलेश भारती ने कहा कि 25 दिसंबर को भारत रत्न श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी की जन्म जयंती को पूरे देश में 'सुशासन दिवस' के रूप में मनाया जाता है। अटलजी की जन्म शताब्दी के अवसर पर भाजपा द्वारा विशेष कार्यक्रमों की श्रृंखला आयोजित की जा रही है। इसके पश्चात 26 दिसंबर को वीर बाल दिवस के अवसर पर धार के मंडल एवं जिला स्तर पर कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

जिलाध्यक्ष भारती ने कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी जी के जन्मशताब्दी वर्ष के अंतर्गत पखवाड़ा सप्ताह मनाया जाएगा। 24 दिसंबर को अटल बिहारी वाजपेयी जी की स्मृति में धार के प्रत्येक मंडलों में महापुरूषों की प्रतिमा की साफ सफाई कर दीप प्रज्जवलन किया जाएगा। साथ ही चित्रकला प्रतियोगिता, ग्राफिक्स एवं रील प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, रंगोली प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता एवं निबंध प्रतियोगिता का आयोजन भी होगा।

बैठक का संचालन भाजपा जिला महामंत्री देवेंद्र सोनोने व आभार भाजपा जिला महामंत्री राकेश पटेल ने माना। जानकारी भाजपा के जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा व जिला सह मीडिया प्रभारी मनोज कवि ने दी।

मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री स्व. मोतीलाल वोरा जी की जयंती पर विधानसभा में पुष्पांजलि सभा

भोपाल। मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री स्व. मोतीलाल वोरा जी की जयंती पर शनिवार को विधानसभा के सेंट्रल हॉल में उनके चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की गई। इस अवसर विधानसभा के पूर्व प्रोटेम स्पीकर एवं विधायक श्री रामेश्वर शर्मा, उप नेता प्रतिपक्ष श्री हेमंत सत्यदेव कटारे विधायक श्री भगवान दास सबनानी, पूर्व विधायक श्री पीसी शर्मा, श्री वोरा जी की सुपुत्री श्रीमती अर्चना मिश्रा एवं दामाद श्री कन्हैया लाल मिश्रा सहित विधानसभा के अधिकारी/कर्मचारी एवं अन्य गणमान्यजन उपस्थित रहे।

उप मुख्यमंत्री ने सांसद कप खेल प्रतियोगिता का किया शुभारंभ

खेलों से तन मन स्वस्थ्य रहने के साथ मिलती है अनुशासन की सीख : उप मुख्यमंत्री शुक्ल

भोपाल। जिले के सभी विधानसभा क्षेत्रों में 29 अगस्त से सांसद कप खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है। इस क्रम में रीवा विधानसभा क्षेत्र की सांसद कप खेल प्रतियोगिता का मार्तण्ड उत्कृष्ट विद्यालय में आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने शुभारंभ किया। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री ने कहा कि खेलों से तन मन स्वस्थ्य रहने के साथ हमें जीवन में अनुशासन की सीख मिलती है।

खेलों से प्रतिस्पर्धा की भावना का विकास होता है। सांसद श्री जनार्दन मिश्र ने जिले के सभी विधानसभा क्षेत्रों में सांसद कप प्रतियोगिता आयोजित कराके खेल प्रतिभाओं को आगे बढ़ने का अवसर दिया है। सांसद कप खेल प्रतियोगिता में फुटबाल, कबड्डी, बालीवाल, क्रिकेट, कराटे, खो खो जैसे खेलों के साथ-साथ परंपरागत ग्रामीण खेलों जैसे गेंद गिप्पी की भी प्रतियोगिताएं हो रही हैं। सांसद कप खेल प्रतियोगिताओं का भव्य समापन 25 दिसंबर को स्पोर्टस काम्पलेक्स रीवा में किया जायेगा। स्पोर्टस काम्पलेक्स में राष्ट्रीय और विश्व स्तरीय खेल प्रतियोगिताओं के आयोजन के लिए फुटबाल मैदान, एथलेटिक्स तथा इंडोर खेलों की सुविधा है। यह विन्ध्य के प्रतिभाशाली खिलाड़ियों के लिए बड़ी सौगात है। समारोह में उप मुख्यमंत्री ने विभिन्न खेलों के खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त किया। समारोह में अध्यक्ष नगर निगम श्री व्यंकटेश पाण्डेय, जिला भाजपा अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र कुमार गुप्ता, श्रीमती हेमलता सिंह, संभागीय खेल अधिकारी एम के धौलपुरी तथा बड़ी संख्या में खिलाड़ी उपस्थित रहे।

34वीं अंतर क्षेत्रीय खेल प्रतियोगिता- रीवा क्षेत्र बना ओवरऑल चैम्पियन

रीवा। 14 से 19 दिसम्बर 2025 तक रीवा में आयोजित जलसंसाधन विभाग की 34वीं अंतर क्षेत्रीय खेल प्रतियोगिता में रीवा क्षेत्र ने कबड्डी, बेडमिंटन, शतरंज, टेबल टेनिस,में गोल्ड मेडल तथा फुटबॉल, लान टेनिस शूटिंग बाल में रजत पदक प्राप्त कर चेम्पियन आफ़ चेम्पियन का खिताब जीता। वहीं भोपाल क्षेत्र ने क्रिकेट,लान टेनिस में गोल्ड तथा टेबल टेनिस तथा केरम में रजत पदक प्राप्त किया, व्हालीवाल में नर्मदापुरम क्षेत्र ने तथा शूटिंगबाल में इन्दोर ने गोल्ड प्राप्त किया।

शुक्रवार को खेले गए क्रिकेट के फ़ाइनल में भोपाल ने ग्वालियर क्षेत्र को 35 रनों से हराया। ग्वालियर ने टास जीतकर पहले गेंदबाजी करते हुए भोपाल को बल्लेबाज़ी के लिए बुलाया भोपाल ने कार्यवाहक कप्तान विरेन्द्र शाह के ताबड़तोड़ 74 रनों की धमाकेदार बल्लेबाजी का प्रदर्शन किया समीर सोनी ने 32 , सन्नी अमरेलिया ने 15तथा अविनाश साहू ने 17 रनों की पारी खेली कुल 171 का पीछा करते हुए ग्वालियर क्षेत्र के दो विकेट जल्दी गिर गये भोपाल क्षेत्र के समीर सोनी ने तीन आदित्य ने दो अविनाश साहू ने दो, सन्नी ने एक विकेट लिया ग्वालियर की टीम बीस ओवर्स में 123 रन ही बना सकी भोपाल ने यह मैच 35 रनों से जीत लिया भोपाल के समीर सोनी को फाइनल मैच का मैन ऑफ द मैच,अकबर सिद्दीकी को सर्वश्रेष्ठ विकेटकीपर, आदित्य सिंह को सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज इंदौर के विक्की गोहर सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज तथा वीरेंद्र सोलंकी को को प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित किया गया।?

उप मुख्यमंत्री ने बसामन मामा में किसान एवं सहकारिता सम्मेलन की तैयारियों का लिया जायजा

केन्द्रीय गृह मंत्री का सेमरिया क्षेत्र में आगमन हमारे लिए गौरव का क्षण है : उप मुख्यमंत्री

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने बसामन मामा गौअभ्यरण्य में 25 दिसंबर को आयोजित होने वाले प्राकृतिक खेती माडल के लोकार्पण तथा किसान एवं सहकारिता सम्मेलन की तैयारियों का जायजा लिया। उप मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम स्थल, पार्किंग स्थल, नवनिर्मित भोजन शाला, गौशाला, मंदिर तथा प्राकृतिक खेती के लिए बनाये गये विभिन्न प्रकल्पों का निरीक्षण किया। उप मुख्यमंत्री ने गौअभ्यारण्य के प्रशासनिक भवन परिसर में आयोजित बैठक में सम्मेलन की तैयारियों की समीक्षा की।

उप मुख्यमंत्री ने कहा कि केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी 25 दिसंबर को बसामन मामा गौअभ्यारण्य का दौरा करेंगे। केन्द्रीय गृह मंत्री किसान एवं सहकारिता सम्मेलन में निर्माण कार्यों का लोकार्पण तथा भूमिपूजन करने के साथ विशाल जनसभा को सम्बोधित करेंगे। केन्द्रीय गृह मंत्री बसामन मामा गौअभ्यारण्य का भ्रमण कर गौवंश की सेवा के लिए किये जा रहे प्रयासों की जानकारी लेंगे। साथ ही उद्यानिकी तथा खेती के लिए गौअभ्यारण्य में विकसित किये जा रहे प्राकृतिक एवं जैविक खेती के लिए माडल का लोकार्पण करेंगे। इस माडल में जैविक विधि से उगाये गये पौधे, जैवविविधता से जुड़े 60 तरह के बीज तथा 12 तरह के जैविक खाद

कीटनाशकों का प्रदर्शन किया जायेगा। केन्द्रीय गृह मंत्री का सेमरिया क्षेत्र में आगमन हमारे लिए गौरव का क्षण है। उप मुख्यमंत्री ने सम्मेलन की मंच व्यवस्था, सुरक्षा व्यवस्था, वाहन की पार्किंग, साफ-सफाई तथा पेयजल व्यवस्था तथा बिजली की आपूर्ति के संबंध में संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिये। बैठक में उपस्थित अपर कलेक्टर श्रीमती सपना त्रिपाठी, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी मेहताब सिंह गुर्जर तथा एसडीएम सिरमौर दृष्टि जायसवाल ने सम्मेलन के लिए की जा रही तैयारियों की जानकारी दी। गौअभ्यारण्य प्रबंधन समिति के सचिव सेवानिवृत्त उप संचालक पशुपालन डॉ. राजेश मिश्रा ने गौअभ्यारण्य में किये जा रहे कार्यों का विवरण दिया। बैठक में जिला पंचायत श्रीमती नीता कोल, पूर्व विधायक श्री केपी त्रिपाठी, जिला भाजपा अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र कुमार गुप्ता, श्री राजेश पाण्डेय अन्य जनप्रतिनिधिगण संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे। उप मुख्मंत्री ने बसामन मामा तीर्थ जाकर दर्शन तथा पूजा अर्चना की।

'फरार' को 50 साल हो गए कुछ अनोखी बातें अनुत्तरित

अमिताभ बच्चन की फिल्म 'फ़रार' की रिलीज को 50 साल पूरे हो गए। 1975 में 21 नवंबर को फ़िल्म रिलीज़ हुई थी। शंकर मुखर्जी इस फ़िल्म के डायरेक्टर थे। अमिताभ-शर्मिला के अलावा संजीव कुमार भी इस फिल्म में थे। अमिताभ बच्चन सहित सभी कलाकारों ने इस फिल्म में बढ़िया अभिनय किया। अमिताभ के दृश्य काफ़ी इंटेंस थे। इस फिल्म की ज्यादातर शूटिंग फिल्मिस्तान स्टूडियो में हुई थी। 'फ़रार' उन कुछ फ़िल्मों में से एक है जिसकी क्रेडिट लिस्ट्स में किसी प्रोड्यूसर का नाम नहीं दिया गया। सिर्फ़ प्रोडक्शन कंपनी का नाम दिया गया है, जो है अलंकार चित्रा। प्रोड्यूसर का नाम क्यों नहीं दिया गया, ये नहीं पता चल सका।

फरार' की कहानी एक आम आदमी के अपराधी बन जाने, बदले की आग और भावनात्मक द्वंद्व के इर्द-गिर्द घूमती है। राजेश (बच्चन) नाम का एक मध्यमवर्गीय युवक अपनी बहन के साथ रहता है और एक लड़की से प्रेम करता है। उसका इरादा बहन की शादी के बाद खुद शादी करने का है। लेकिन, एक दिन उसकी बहन का बलात्कार होता है और उसकी हत्या कर दी जाती है। क़ानून अपराधी तक नहीं पहुंच पाता, जिससे राजेश भीतर से टूट जाता है। वह खुद क़ातिल की तलाश कर उसे मार डालता है और पुलिस के हाथ नहीं आता और फरार हो जाता है।

राजेश भागते-भागते एक छोटे बच्चे (मास्टर राजू) को बंधक बनाकर उसी घर में शरण लेता है। बाद में राज खुलता है कि यह बच्चा उसकी पुरानी प्रेमिका माला (शर्मिला टैगोर) का बेटा है, जिसकी शादी अब इंस्पेक्टर संजय (संजीव कुमार) से हो चुकी है। वही पुलिस अफसर राजेश को पकड़ने के मिशन पर भी है। यहां से कहानी का असली तनाव शुरू होता है, जहां राजेश के सामने उलझन है कि वह बच्चे को

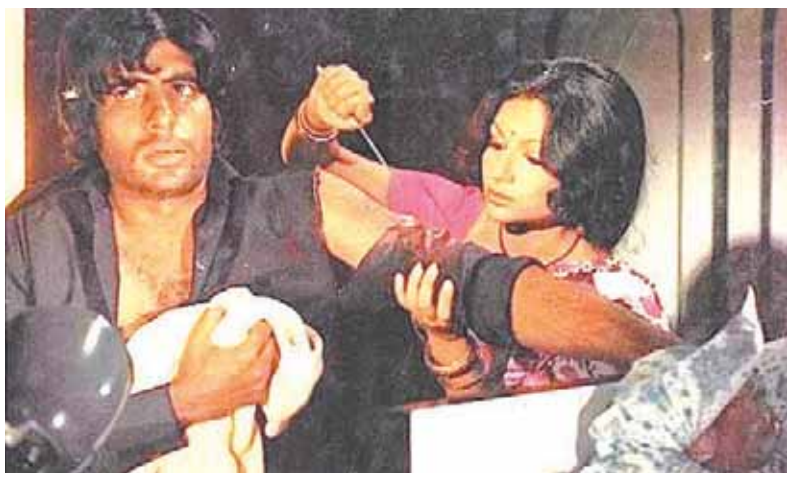

ढाल बनाकर भागे या उसे सुरक्षित छोड़कर अपने अपराध का सामना करे।

जब 'फ़रार' की शूटिंग हो रही थी उस दौर में मास्टर राजू मशहूर बाल कलाकार बन चुके थे। वो फिल्मों की शूटिंग में बहुत व्यस्त रहते थे। एक दिन में तीन-चार फिल्मों की शूटिंग करते थे। इस कारण कई बार 'फ़रार' में अमिताभ और मास्टर राजू के दृश्य अलग-अलग शूट करने पड़ते थे। यानी अमिताभ के डायलॉग उनके क्लॉज़ अप शॉट्स के साथ। मास्टर राजू के डायलॉग उनके क्लॉज़ के साथ। जबकि, फिल्म में अमिताभ और मास्टर राजू एक कमरे में कई दिनों तक बंद रहते हैं। दोनों के बीच एक अनोखा रिश्ता बन जाता है।

अमिताभ और मास्टर राजू को साथ दिखाने के लिए उनके कुछ दृश्य साथ में शूट किए गए थे। मगर अधिकतर दृश्यों में वो दोनों साथ नहीं है। वो शूट ऐसे किया गया था कि एडिटिंग के दौरान उसे इस तरह से दिखाया गया जैसे दोनों आमने-सामने हैं। मास्टर राजू बताते हैं कि ये इसलिए करना पड़ा था क्योंकि उन दिनों वो बहुत बिज़ी रहते थे। और उन्हें दूसरी फिल्मों की शूटिंग करने भी जाना पड़ता था। शायद कोई यकीन ना कर पाए, मगर उस ज़माने में अमिताभ बच्चन को भी मास्टर राजू के आने का इंतज़ार करना पड़ता था। ताकि वो मास्टर राजू के साथ वाले अपने सीन जल्दी से फ़िल्मा सकें।

फिल्म के कलाकार थे सुलोचना लाटकर, राजन हक्सर, भगवान दादा, डीके सप्रू व मुराद। राजेंद्र कृष्ण जी ने इस फ़िल्म के गीत लिखे थे। और गीत कंपोज़ किए थे कल्याणजी-आनंदजी ने। क्योंकि, इस फिल्म में शर्मिला टैगोर के बेटे का किरदार निभाने वाले मास्टर राजू को भी नहीं पता है। ये जानकारी मास्टर राजू के ही एक वीडियो में दी गई है। मास्टर राजू ने बताया है कि अलंकार चित्र का ऑफ़िस फिल्मिस्तान के पास ही मौजूद था।

रियल बॉक्स

राष्ट्रभक्ति का अमर स्वर और 'वंदे मातरम'

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

हिंदी फिल्म इंडस्ट्री की खासियत है, कि वो हर उस प्रसंग में अपने आपको शामिल कर लेती है, जिसमें लोकप्रियता मिलने की संभावना नजर आती है। ऐसा ही एक मौका है राष्ट्रगीत वंदे मातरम का, जिसकी रचना को डेढ़ सौ साल पूरे हो गए हैं। वास्तव में यह ऐसा गीत है, जो सुनने वाले के दिल में राष्ट्रभक्ति की अलख जगाता है। जब देश अंग्रेजों का गुलाम था, तब इस गीत ने लोगों में विद्रोह की भावना जगाने का काम किया और आजाद होने के बाद यही गीत देश प्रेम का प्रतीक बना। फिल्मकारों ने भी वंदे मातरम को अलग संदर्भों में कई बार प्रयोग किया। फिल्मों में इस गीत ने देशभक्ति को दर्शकों की भावनात्मक गहराई जोड़ने का काम किया।

1952 में आई फिल्म 'आनंद मठ' में इसे लता मंगेशकर ने गाया था। इसके बाद 'एबीसीडी-2' (2015) और 'फाइटर' (2024) जैसी ताजा दौर की फिल्मों में इसे डांस और एक्शन थीम के साथ जोड़ा गया। आशय यह कि एक चर्चित गीत का कई बदले प्रसंगों में उपयोग हुआ। जबकि, इस राष्ट्रगीत की रचना बंकिमचंद्र चटर्जी ने 7 नवंबर 1875 को अक्षय नवमी के अवसर पर की थी। अब इसे डेढ़ सौ साल पूरे हो गए। देश की गुलामी के समय देशभक्ति वाली फिल्मों या किसी फिल्म के देशभक्ति वाले दृश्यों को फिल्माते वक्त 'वंदे मातरम' को बैकग्राउंड में बजाया जाता रहा।

बंकिम चंद्र चटर्जी ने वंदे मातरम को लिखा जरूर, पर इसके बाद इसके प्रसंग और धुन में बदलाव आता गया। यह फिल्म इंडस्ट्री में भी समय के साथ दिखाई दिया। पहली बार 'वंदे मातरम' गीत को 1952 में फिल्म 'आनंद मठ' के लिए लता मंगेशकर ने गाया, जिसकी धुन को संगीतकार और गायक हेमंत कुमार ने धुन में पिरोया था। दरअसल, 'वंदे मातरम' की उत्पत्ति 1882 में लिखे उपन्यास 'आनंदमठ' से जुड़ी है, जो संन्यासी विद्रोह की पृष्ठभूमि पर आधारित था। इस गीत को आजादी की जंग के दौर में रवींद्रनाथ टैगोर ने 1896 में कांग्रेस अधिवेशन में गाया था, तब यह राष्ट्र प्रेम का प्रतीक बना। हिंदी सिनेमा में तो इसका प्रवेश 1952 की फिल्म 'आनंदमठ' से ही हुआ, जिसका निर्देशन हेमेन गुप्ता ने किया था। इस फिल्म में वंदे मातरम दो बार उपयोग हुआ। लता मंगेशकर का स्त्री स्वर में और हेमंत कुमार का पुरुष स्वर। प्रदीप कुमार, गीता बाली और पृथ्वीराज कपूर जैसे सितारों के अभिनय के बीच यह गीत दर्शकों के दिलों में उतर गया था। हेमंत कुमार की धुन ने मूल संस्कृतनिष्ठ बंगाली गीत को हिंदी फिल्म के परदे पर अमर बना दिया, जो आज भी खास अवसरों पर सुनाई देता है।

इसके बाद इस गीत को कई फिल्मों में नई धुन में सुना गया। वंदे मातरम हमारे देश का राष्ट्रीय गीत है, जिसे कई नामी गायकों ने गाया। आजादी के समय 15 अगस्त 1947 को पंडित ओंकारनाथ ठाकुर ने आकाशवाणी पर इसे गाया था। इससे पहले 1896 में रवींद्रनाथ टैगोर ने कांग्रेस अधिवेशन में इसे पहली बार स्वरबद्ध कर गाया था। इसके बाद इसे कई गायकों ने स्वरबद्ध किया। लता मंगेशकर ने इसे पहली बार गाया। इसके बाद साधना सरगम, मधुरी मधुकर, मनोज मिश्रा, देबासिस और सुखविंदर सिंह ने भी इसे स्वर दिया। लेकिन,लेकिन, 1997 में संगीतकार एआर रहमान ने 'मां तुझे सलाम' एल्बम के लिए वंदे मातरम को खुद ही संगीतबद्ध कर गाया भी।

खास बात यह कि यह गीत रात 2 बजे विशेष परिस्थितियों में रिकॉर्ड किया गया और फिर यह आइकॉनिक बन गया। 1951 से लेकर साल 2012 तक इस गाने की धुनों पर फिल्म इंडस्ट्री के कई गायकों का जादू चला। बाद में इसमें सोनू निगम, सुनिधि चौहान और शंकर महादेवन का नाम भी शामिल है। लेकिन, जब भी 'वंदे मातरम' का जिक्र आया तो जहन में सबसे पहले एआर रहमान का 'मां तुझे सलाम' का ही नाम गूंजा। क्योंकि, एआर रहमान पेशे से संगीतकार है, लेकिन उनकी आवाज

का जादू ने 'मां तुझे सलाम गाने' में अपना ऐसा जलवा बिखेरा कि लोग आज भी इस गाने को सुनते हैं तो उनमें देशभक्ति जाग जाती है। इस गाने को उन्होंने साल 1997 में अपने अलग ही अंदाज में गाया था।

फिल्म इतिहास के पन्नों को पलटा जाए, तो शाहरुख खान, ऋतिक रोशन, काजोल, करीना कपूर, अमिताभ बच्चन, जया बच्चन, रानी मुखर्जी अभिनीत 'कभी खुशी कभी गम' में भी 'वंदे मातरम' गीत सुनाई दिया। जबकि, यह एक फैमिली ड्रामा फिल्म है। यह गाना फिल्म में ऐसे प्रसंग पर सुनने को मिला, कि दर्शक न सिर्फ भावुक हुए, बल्कि उनमें देशभक्ति की भावना भी उमड़ पड़ी। फिल्म में इसे उषा उत्थुप और कविता कृष्णमूर्ति ने गाया था। साल 2015 में आई इस फिल्म में 'वंदे मातरम' को इसके साउंडट्रैक में शामिल किया गया। इसे काफी अलग, लेकिन दिलचस्प अंदाज में पेश किया गया है। इसी साल (2015) में आई फिल्म 'एबीसीडी-2' के लिए इसे दलेर मेहंदी और बादशाह ने गाया। इसमें संगीत था सचिन-जिगर का।

2019 में आई फिल्म 'इंडियाज मोस्ट वांटेड' में भी राष्ट्रगीत बजा। पापोन, अल्तमश फरीदी और अमित त्रिवेदी द्वारा गाए इस गीत का नया वर्जन शामिल किया गया था। मानुषी छिल्लर और वरुण तेज अभिनीत 'ऑपरेशन वैलेंटाइन' साल 2024 में रिलीज हुई। इसमें सुखविंदर सिंह का गाया 'वंदे मातरम' गीत सुनने को मिला। 2024 में ऋतिक रोशन, अनिल कपूर और दीपिका पादुकोण अभिनीत फिल्म 'फाइटर' में भी 'द फाइटर एंथम' के रूप में वंदे मातरम सुनाई दिया। यह देशभक्ति वाली एक्शन फिल्म है। 2025 की जासूसी फिल्म 'सलाकार' में भी 'वंदे मातरम' काफी अलग लेकिन रोचक अंदाज में सुनने को मिला। सूर्य शर्मा, नवीन कस्तुरिया और मौनी रॉय अभिनीत यह फिल्म अगस्त में रिलीज हुई थी।

'वंदे मातरम' ने हिंदी सिनेमा को देशभक्ति का मजबूत धागा दिया। यह गीत न केवल स्वतंत्रता संग्राम की याद दिलाता है, बल्कि आधुनिक फिल्मों में एकता और बलिदान का भी प्रतीक भी बन गया। फिल्मों से पहले 1905 में हीरालाल जैन के बनाए भारत के पहले राजकीय चित्रपट में 'वंदे मातरम' में भी इसका उपयोग हुआ था। लेकिन, तब यह हिंदी में नहीं था। आजादी के ठीक बाद 1948 में मराठी फिल्म 'वंदे मातरम' रिलीज हुई, जिसका निर्देशन राम गबाले ने किया और संगीत सुधीर फडके ने दिया। इसमें पुल देशपांडे और सुनीता देशपांडे ने मुख्य भूमिकाएं निभाई थी तथा गीत गदी माडगूळकर ने लिखे। फिल्म के 'वेद मंत्राहून वंद्य' जैसे गाने लोकप्रिय हुए, लेकिन मूल 'वंदे मातरम' का स्पष्ट उल्लेख नहीं था।

1985 में इसी नाम पर एक तेलुगु फिल्म भी बनाई गई। टी कृष्णा के निर्देशन में बनी इस फिल्म में विजयशांति और डॉ राजशेखर लीड रोल में दिखाई दिए। आश्चर्य की बात यह कि अभी तक किसी हिंदी फिल्मकार ने इस लोकप्रिय टाइटल का उपयोग करके हिंदी फिल्म नहीं बनाई। जबकि, इस गीत को ऐतिहासिक संदर्भों में देखा जाए तो आजादी से पहले 'वंदे मातरम' आजादी के आंदोलन का प्रमुख जयघोष था। पर, ब्रिटिश सेंसरशिप के कारण फिल्मों में इसका सीधा उपयोग सीमित ही रहा। पहली बार 1952 में 'आनंदमठ' ने इसे हिंदी परदे पर स्थापित किया। आज भी जब 'वंदे मातरम' कानों में सुनाई देता है, तो दिल में एक अलग ही देशभक्ति का उन्माद उभरता है, यही तो इस कालजयी गीत की विशेषता भी है।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

'तू मेरी मैं तेरा मैं तेरा तू मेरी' का ट्रेलर रिलीज

कार्तिक आर्यन और अनन्या पांडे की अपकमिंग फिल्म 'तू मेरी मैं तेरा मैं तेरा तू मेरी' का ट्रेलर फाइनली रिलीज हुआ। करीब 3 मिनट 21 सेकंड के इस ट्रेलर में कार्तिक आर्यन के बिंदास अंदाज से होता है, जिसे न तो बीते कल में इंटरेस्ट है और न आने वाले कल के लिए वो परेशान होकर जीना चाहता है। वो सिर्फ आज में यकीन करता है। ट्रेलर में अनन्या पांडे की एंट्री होती है, जो फिल्म में एक राइटर के रोल में दिख रही हैं।

इस ट्रेलर में जहां सारी झलकियां देखी-दिखाई सी नजर आ रही, वहीं बीच-बीच में अनन्या को इम्प्रेस करने के लिए जिस तरह के पंच लाइन मारते हैं। उसे सुनकर वो हर बार मुंह बनाती हैं। ट्रेलर में विदेशों के खूबसूरत लोकेशन

और शानदार नजारे हैं। हालांकि, डांस-गाना, मजाक-मस्ती के बीच आखिर में कुछ इमोशनल झलकियां भी हैं जिसमें जैकी श्रॉफ भी नजर आ रहे हैं।

इस अपकमिंग फिल्म 'तू मेरी मैं तेरा मैं तेरा तू मेरी' के ट्रेलर में रोमांस और कॉमेडी के बीच दोनों में नोक-झोंक भी दिखती है। शुरुआत में हर बात पर चिढ़ने वाली अनन्या आखिरकार कार्तिक के प्यार में पड़ जाती है। दोनों के बीच रोमांस भी दिखता है लेकिन फिर वो मोड़ आता है जहां उन्हें अलग होने की नौबत आ जाती है। कार्तिक इसके लिए तैयार हो जाते हैं और कुछ इमोशनल डायलॉग भी मारते दिखते हैं। फिल्म में हैप्पी एंडिंग मूवमेंट हैं जो अक्सर धर्मा प्रोडक्शन की फिल्मों में दर्शक देखते आए हैं।

'सोनी मैक्स' पर 'सैयारा' का वर्ल्ड टीवी प्रीमियर

जब पूरा साल शोरगुल भरी ब्लॉकबस्टर फिल्मों का रहा, उन सबके बीच 'सैयारा' ऐसी फिल्म आई, जिसने दशक की सबसे बड़ी प्रेम कहानी बनकर दर्शकों का दिल जीत लिया। बॉक्स ऑफिस पर धमाल मचाने और ब्लॉकबस्टर बनने के बाद अब यह फिल्म टीवी के परदे के जरिए बड़े दर्शक वर्ग तक पहुंच गई। महानगरों से लेकर छोटे कस्बों तक दिलों को छूने के लिए 'सैयारा' का वर्ल्ड टेलीविजन प्रीमियर आ गया। 'सोनी मैक्स' ने अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर इसकी घोषणा की।

मोहित सूरी के निर्देशन और यशराज फिल्म्स के बैनर तले बनी 'सैयारा' एक म्यूज़िकल रोमांटिक ड्रामा है, जिसमें अहान पांडे और अनीत पड्डा ने मुख्य भूमिकाएं निभाई हैं। उनकी परफॉर्मेंस ने दर्शकों के दिल पर गहरा असर छोड़ा और फिल्म रिलीज़ के तुरंत बाद ही उन्हें देशभर में लोकप्रिय हार्टथ्रॉब बना दिया। भारतीय दर्शक हमेशा से बेहतरीन प्रेम कहानियों के प्रति आकर्षित रहे हैं।

ऐसी कहानियां जो बार-बार देखी जाती हैं और हर बार नया अहसास जगाती हैं। 'सैयारा' इसी भावनात्मक जुड़ाव को छूती है।

यह फिल्म ऐसे रोमांस को दिखाती है, हर दर्शक के दिल में बस जाने का इरादा रखता है। कहानी है क्रिश कपूर (अहान पांडे) की है, जो एक जुनूनी संगीतकार है और वाणी बत्रा (अनीत पड्डा) है शांत, कोमल हृदय वाली कवयित्री। दोनों की राहें संगीत और कला के प्रति साझा प्रेम से एक होती हैं। जब क्रिश को पता चलता है कि वाणी अल्जाइमर से जूझ रही है, तब भी उसका प्यार डगमगाता नहीं, बल्कि वह उसके साथ खड़े रहने का फैसला करता है। यह दर्शाते हुए कि सच्चा प्यार हर कठिनाई से ऊपर होता है। फिल्म का संगीत भी दर्शकों के दिलों में बस जाता है और इसका टाइटल ट्रैक तो वायरल हिट बन चुका है! क्रिसमस नज़दीक होने के साथ, सैयारा एकदम परफेक्ट वॉच मानी जा रही है। गर्माहट भरी, भावुक और रोमांटिक स्टोरी।

दर्शकों में गरमी भरती, पर ठंड से कांपती नायिका

अशोक जोशी

हिंदी फिल्मों को इस बात का तो श्रेय दिया जा सकता है कि उसने जीवन के हर पक्ष को छूने का प्रयास किया है। बदलते मौसम का भी फिल्मों पर बकायदा असर हुआ है और हो रहा है। फिल्मों ने परदे पर सबसे ज्यादा

बारिश कर सिनेमा हॉल मे बैठे दर्शकों को अंदर तक भिगोया, लेकिन सर्दी के मामले में इसका गणित कुछ उलटा है। परदे पर जितनी ठंड पड़ती है और नायिका जितनी कांपती है, दर्शकों की सांसें उतनी गरम होने लगती है। जैसे जैसे नायक ठंड से कांपती नायिका के समीप खटिया सरकाने लगता है दर्शकों को पसीना आने लगता है।

इन दिनों देश के कई हिस्सों में शीतलहर जारी है। प्रकृति का उसूल है कि जब धरती का तापमान सर्द होता है तो इंसान कांपने लगता है। लेकिन हिंदी फिल्में वह अपवाद है जब सिनेमा हाल में पर्दे का मौसम सर्द होता है दर्शकों की नसों में गर्म खून दौड़ने लगता है। वैसे तो आज के सर्द मौसम में धुरंधर की गरमाहट ने दर्शकों को गर्म बना रखा है। लेकिन प्रायः निर्माता सर्द मौसम का सहारा लेकर दर्शकों की भावनाओं को भड़काकर सिनेमा हॉल का तापमान तब से बढाते चले आ रहे हैं जब वातानुकूलन सिनेमा हॉल का जमाना नहीं था और बाहर लाइन में ठंड से जूझता दर्शक सिनेमा हॉल में आते ही पर्दे पर सर्द मौसम में बिखेरी गई गर्माहट से रूबरू होकर गर्म होने लगता आया है।

हिन्दी फिल्मों को कम से कम इस बात का तो श्रेय दिया ही जा सकता है कि उसने हमारे जीवन के हर पक्ष को जैसा भी हो छूने का कम से कम प्रयास तो किया है। समाज ही नही बल्कि बदलते मौसम का भी हिन्दी फिल्मों पर बकायदा असर हुआ है और हो रहा है। वैसे तो हिन्दी फिल्मों ने पर्दे पर सबसे ज्यादा बरसात कर सिनेमा हॉल में बैठे दर्शकों को अंदर तक भिगोया है लेकिन सर्दी के मामले में इसका गणित कुछ उल्टा है। सिनेमा के पर्दे पर जितनी सर्दी गिरती है नायिका जितनी कांपती है, दर्शकों की सांसें इतनी गर्म होने लगती है। जैसे जैसे नायक ठंड से कांपती नायिका के समीप खटिया सरकाने लगता है दर्शकों को पसीना आने लगता है।

यह हिंदी फिल्में ही हैं जहां कश्मीर से लेकर स्विट्जरलैंड की कंपकंपाने वाली सर्दी में नायिका स्लीवलेस कपडे पहने आग बरसाती रहती है। सर्दी

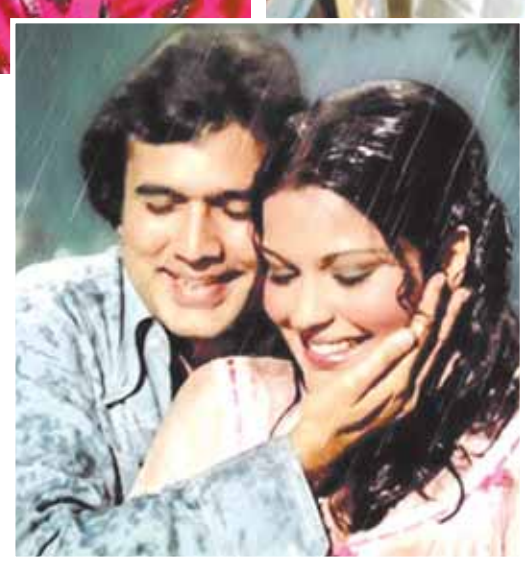

यह गरमा गरम फार्मूला केवल कुछ दृश्यों तक सीमित नहीं हैं। बॉलीवुड की कई फिल्में ऐसी हैं जिन्हें ऐसी सर्द लोकेशन पर फिल्माया गया है जहां गीत तो क्या मुंह से निकले शब्द तक जम जाते है। यह करिश्मा हिन्दी फिल्मों में ही हो सकता है कि सूरज को मुँह चिढाकर सर्दी अपने पूरे शबाब पर हो और शम्मी कपूर सा नायक बरफ के पहाड़ों पर जंगली बनकर सायरा बानो से कह रहा होता है 'सर्द आहें कह रही है, है ये कैसी बला की आग!' लोकेशन शिमला की सर्द रातों की हो, सूनसान सडक पर कोहरा छाया हो और तेरे घर के सामने का नायक देव आनंद लैम्ब्रेटा उठाकर नूतन को खोजते खोजते दिल्ली से शिमला आ जाता है और सर्दी में कांपते कांपते शिमला की सर्द रातों में कहता है 'तू कहाँ ये बता इस नशीली रात में।' इसी के अंतरे में कहा गया है आई जब ठंडी हवा मैंने पूछा जो पता, वो भी शरमा के गई और बेचैन किया।

लगता है कपूर खानदान को सर्दी से बडा प्यार है क्या चाचा क्या भतीजा और क्या भतीजी सभी ने पर्दे पर सर्दी के माध्यम से गरमी फैलाने में बड़ा योगदान दिया है। बडे चाचा शम्मी कपूर का तो जिक्र हो चुका है। अब छोटे शशि कपूर की बातें की जाए तो उन्होंने भी आ गले लग जा में सर्द पड़ चुकी शर्मिला को अपने बदन की गरमी देकर बचाया लेकिन उनकी इस कोशिश में दर्शकों की जान पर बन आयी। इधर पर्दे पर बर्फ पड़ चुकी शर्मिला को शशि अपने बदन की गरमी देते हैं उधर एयर कंडीशंड सिनेमा हॉल में बैठे होने के बावजूद पसीने मे तर होने लगते है।

भतीजी करिश्मा भी कम नहीं है। राजा बाबू में गोविंदा के साथ जब वह मादक अंदाज में कहती है 'सरकाइलो खटिया जाडा लगे' तो सिनेमा हाल से जाडा गायब हो जाता है और दर्शकों को पसीना आने लगता है। ऐसा ही कुछ करिश्मा लीना चंदावरकर और विश्वजीत ने बरसों पहले मैं सुंदर हूं में यह गाकर दिखाया था 'मुझको ठंड लग रही है मुझसे दूर तू न जा।'

हिंदी फिल्मों में पहले अक्सर एक सीन तो ऐसा हुआ करता था नायिका कांप रहीं है और नायक उसे अपना कोट ओढा देता था। जॉय मुखर्जी से लेकर विश्वजीत और राजेश खन्ना यह कारनामा दिखा चुके हैं। जब कोट से काम नहीं चला तो नायक और नायिका के बीच आग का ठूंठ रख दिया जाता और जब आग के सामने टॉवेल लपेटे नायिका और उघाड़ा बैठा नायक के पार्श्व में 'आराधना' का यह गाना आए 'भूल कोई हमसे ना हो जाए' तो सिनेमा हाल में बैठा दर्शक यही सोचता है काश उसे ऐसी कोई भूल करने का मौका मिलता।

ऐसी बात नहीं कि फिल्मों में सर्दी और हीरो का कोट केवल नायिका को गरम करने के काम आता है। कई फिल्मों में नायक के इस कोट ने फिल्म के क्लाइमेक्स को बदला है। 'प्यासा' का नायक जब ठंड से कांपते गरीब को अपना कोट देता है और वह दुर्घटना में मारा जाता है तो नायक को मरा हुआ समझ लिया जाता है। बाद में हीरो के कोट और हीरोइन की शॉल ने ऐसे कई दृश्य रचे लेकिन इन तमाम दृश्यों के बावजूद दर्शकों को सर्दी से कांपती नायिका और नायक को पर्दे पर आग लगाना ही सबसे ज्यादा अच्छा लगता है।

खास हो गईं... बातें 'आम' की !

प्रकाश पुरोहित

बकरीब चालीस साल पहले लखक को पारिश्रमिक का चेक मिलने लगा था, वरना इसके पहले तो मनी-ऑर्डर ही आया करते थे। लेखक तब मनी-ऑर्डर की रसीद बैठक की टेबल पर लगे कांच के नीचे रखा करते थे। हर आने जाने वाले की निगाह में आता रहे, ऐसा कोण बनाया जाता था। रचना का तो क्या है, बगैर पढ़े भी तारीफ कर सकते हैं, लेकिन रसीद तो पिताजी को भी देखना पड़ेगी और पूछना ही होगा 'अरे वाह, नईदुनिया में लेख छपा है? हां पढ़ा था, उसी का पारिश्रमिक होगा, है ना। बहुत कम देते हैं यार, सिर्फ पचास रुपये। अब तो महंगाई इतनी बढ़ गई है तो पारिश्रमिक भी बढ़ जाना चाहिए। इससे तो नभाटा का अच्छा है, पचहत्तर से कम देते ही नहीं हैं। वहीं भेजा करो ना!' सलाह देते हुए पचास रुपये के मनी-ऑर्डर पर यूं पोता फेर दिया जाता। रचना की गुणवत्ता पर नहीं, पारिश्रमिक पर बहस शुरू हो जाती!

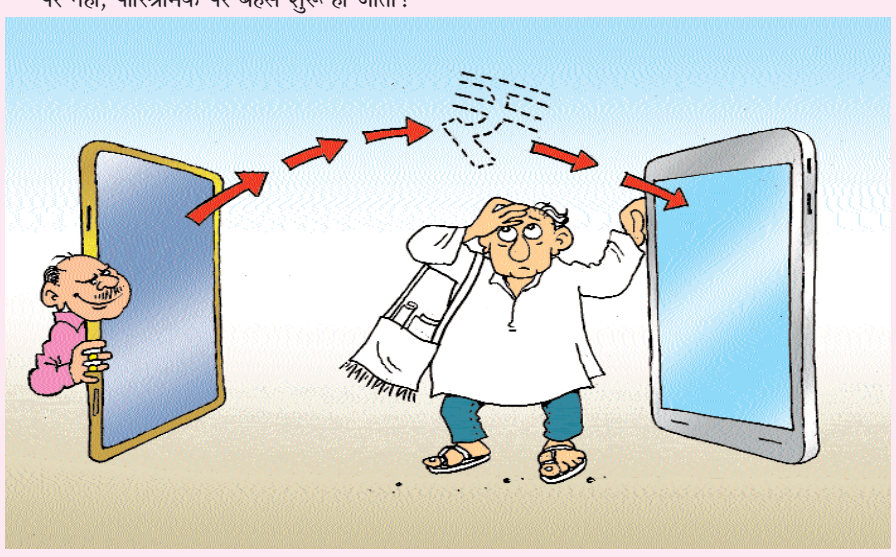

मनी-ऑर्डर में लेखक को दो तरह से नुकसान होता था कि यदि आप घर पर नहीं हैं तो घर का कोई भी ले लेगा और संभव है कि नोट तो हाथ लगे नहीं, यह सूचना जरूर मिल जाए कि घर में खर्च हो गये, तो रसीद ही इस बात का सबूत होती था कि रचना छपी है और पैसा मिला है। दूसरा नुकसान यह कि डाकिया इस उम्मीद में रहता था कि पचास रुपये आये हैं तो चाय-पानी या बख्शी तो मिलेगी ही। आम तौर पर पारिश्रमिक एक माह के बाद ही मिलते थे, जैसे कर्मचारियों को वेतन मिलता है ना, ठीक वैसे ही! यदि पचास से भी कम हो तो फिर बात इज्जत पर आ जाती थी और उसे गोल कर दिया जाता था। याद रहे पांच रुपये का भी मनी-ऑर्डर आता रहता था।

चेक आने लगे तो जैसे लेखक का दर्जा ऊंचा हो गया। सुरक्षा का भाव भी पैदा हुआ कि अब कोई पारिश्रमिक में डंडी नहीं मार सकेगा और डाकिये को क्या पता कि लिफाफे में चेक है या वसूली का नोटिस, तो उसके सामने शर्मिंदा होने से बचने का सुख अलग ही हुआ करता था। चेक जब तक टेबल के कांच तले रहता था, लगता था, जैसे बैंक में जमा है। तब उसकी कीमत, लिखे आंकड़े से कई गुना ज्यादा होती जाती थी! जब तक अगला ना आ जाए, पुराना लगा रहता था। तब छह माह की मियाद होती उसके मरने की। देखने वाले बाज नहीं आते थे 'अरे ये तो वही पुराना वाला लगा रखा है, जमा क्यों नहीं करते। मेरी ही बैंक का है, लाओ दे दो, जमा कर दूंगा।' अब कोई यह भी कहने से रहा कि फुर्सत नहीं मिल रही थी।

ऐसे-ऐसे सूरमा उन दिनों पाए जाते थे कि किसी भी शहर में उन्हें रचना पाठ के लिए बुलाया जाता तो एक तरफ का किराया लगा कर पहुंच जाते थे कि लौटने के लिए तो चेक मिल ही जाएगा। इस चक्कर में उज्जैन से गोवा जाने में भी हिचक नहीं होती थी, कोई आज यह कर के दिखाए, बगैर रिटर्न टिकट के तो घर से बाहर पैर ना निकालें। तब किसी भी बैंक से पैसे निकालने की सुविधा थी। किसी को भी चेक दे कर नकद भी लिए जा सकते थे।

फिल्मी दुनिया के कई किस्से हैं कि निर्माता ने पहला चेक दिया और मुफलिस कलाकार ने बाद में उसे फ्रेम करवा कर बैठक में लगवा लिया और फिर कभी नहीं तुड़वाया। चेक भुनाना तंगहाली में भी मुश्किल लगता था कि लोगों को बतायेंगे क्या अगर जमा कर दिया। तब किसी के लिए यकीन जताने का यह भी तरीका होता था कि ब्लैंक चेक दे दिया, जितनी मर्जी आये भर लेना। गरीबों को नकद और धन्ना सेठों के बीच चेक से ही लेन-देन होता था। विदेश यात्रा में तब ट्रैवलर्स चेक की वजह से ही कोई चल फिर सकता था, क्योंकि उस समय तक कार्ड से लेन-देन शुरू नहीं हुआ था। जब पहली बार जमैका गया था तो मेरे पास तीन लाख के ट्रेवल्स चेक थे, जो एहतियातन मैंने लगेज बैग में छुपा दिए थे।

लन्दन से उड़ कर रात ग्यारह बजे जमैका पहुंचा तो पता चला मेरा सामान तो आया ही नहीं और जेब में कुल पचास डालर थे। वो रात कभी भी भूल नहीं सकता कि बस रोना ही नहीं आया। सामान मिला, लेकिन डेढ़ महीने बाद, उसी जमैका के एयरपोर्ट पर। तब सिंगापुर से कुछ पैसे मुझ तक पहुंचे थे और वहां रहने का हौसला मिला था। तब गुमा बैग मैंने एकाध माह तो देखा भी नहीं था कि ट्रैवलर्स चेक तो रद करवा दिए थे, लेकिन तीन लाख के चेक के बावजूद, जिस मुफलिसी का आनंद लिया, आज भी रोमांच ला देता है।

ये चेक वाली चिकचिक आज इसलिए याद आ रही है कि अभी ताजे आंकड़े बता रहे हैं कि 1990 में जो काम-धाम अस्सी फीसद चेक से होता था, अब दस फीसद पर आ गया है। चूंकि सारा कामकाज डिजिटल पेमेंट से होने लगा है तो रुपये, मनी-आर्डर या चेक की छुअन ही जाती रही। यह तो अंधेरे में किसी को आंख मारने जैसा हो गया है कि ना लेने वाले के हाथ कुछ आया और ना देने वाले के हाथ से कुछ गया। ऐसा नहीं लगता कि मेले में जैसे परिवार के साथ नजर आई प्रेमिका को देखते रहे और ना बात कर सकते और मिलने का तो सोच भी नहीं सकते। देने में उसका हाथ तंग है, इस तरह के वाक्य भी कुछ दिनों में दम तोड़ देंगे। इस हाथ को खबर ना हो कि उस हाथ ने कुछ दिया है, यह बात भी शायद ही कोई याद रखे।

'कौन बनेगा करोड़पति' में अमिताभ जिस तरह चेक लिखते और फाड़ते हैं, कहीं देखने को इसलिए नहीं मिलता है कि दिखावे के लिए ही तो यह हरकत होती है, वरना तो इनामी धनराशि तो खाते में ही जमा होती है। पहले कोई इस तरह चेक फाड़ देता तो ना जाने कितने दिल फट जाते। चेक से लेन-देन कम होने का असर न्यायालय और वकील पर ज्यादा हुआ है कि कोर्ट खुश है चेक बाउंस के केस नहीं आ रहे और वकील दुखी है कि केस नहीं आ रहे-फीस की गारंटी तो रहती थी चेक की वजह से!

...और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

साड़ी बीच नारी है, कि नारी बीच साड़ी है...

साड़ी बीच नारी है, कि नारी बीच साड़ी है...' यह एक अलंकार है जिसका अर्थ है कि क्या साड़ी के बीच में नारी है या नारी के बीच में साड़ी है इसका कोई निश्चित उत्तर नहीं है, क्योंकि यह वाक्य दुर्योधन द्वारा द्रौपदी के चीरहरण के बारे में है जहाँ साड़ी के ना समाप्त होने पर वह भ्रमित हो गया था कि यह नारी है या साड़ी है या इस संदर्भ में कहा जा सकता है कि नारी को साड़ी का पर्याय माना गया है।

विश्व साड़ी दिवस 21 दिसंबर के मौके पर बात करते हुए पहले साड़ी के इतिहास को समझें। साड़ी का इतिहास सालों पुराना है। सिंधु घाटी सभ्यता लगभग (2800 ई.पू.) में स्त्रियां बिना सिले कपड़े लपेटती थी। यह संस्कृत शब्द ''सादी'' (कपड़े की पट्टी) से आया है। कुछ कहते है संस्कृत का शब्द 'सत्तिका' से साड़ी हुई जिसका अर्थ महिलाओं का पहनावा है।

सत्तिका को तीन पार्ट में बांटा गया है

(1) अंतरीया- यह एक प्रकार का निचला वस्त्र था जो मछली के पूंछ के आकार के ड्रेप जैसा दिखता था।

(2) उत्तरीय- कंधे या सिर पर लपेटे जाने वाला पर्दा या शॉल जो विकसित होकर दुपट्टे में बदल गया।

(3) स्टानापट्टा- छाती पर बांधने वाली पट्टी जो ब्लाउज में बदल गई।

इन तीनों को मिलाकर 'पोशाक' कहा जाता था। वेदों, महाभारत में इसका ज़िक्र हुआ है। रंगों के लिये हल्दी, नील, मजीठ का उपयोग होता था। वैदिक काल (1500-5012 ई.पू.) बिना सिले कपड़े पहन जाते थे। यजुर्वेद में इसका उल्लेख है। गांधार की प्राचीन मूर्तियों में साड़ी पहने महिलाओं के चित्रण मिलते हैं। मुगलकाल (16वीं-19वीं सदी) ज़री, ज़रदोज़ी, कामदानी जैसी बारीक रेशमी, सुनहरी, ब्रोकेड का चलन बढ़ने से साड़ी की भव्यता बढ़ गई विक्टोरियन युग में ब्रिटिशकाल में ब्लाउज, चोली का प्रचलन शुरू हुआ। भारत में धीरे धीरे विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाई जैसे, बनारसी, कांचीपुरम, पटोला, महेश्वरी, चंदेरी। कपड़ों का भी विकास हुआ सूती, रेशमी से ब्रोकेड जॉर्जेट, शिफॉन, टिशू, आरगेज़ा आदि। टेकनीक बढ़ी जैसे ब्लॉक प्रिंट, टाई-डाई, बांधनी, लहरिया, ब्रोकेड, तनछुई, बंगाल की तांत की साड़ियाँ, बालूचेरी जाने कितनी विविधता है। साड़ी की लंबाई 4.1 से 8.2 मीटर तक हो सकती है महाराष्ट्र की पारंपरिक साड़ी 9 गजी होती है। 29 अलग-अलग राज्यों में साड़ी की अनूठी बुनाई और विरासत है।

साड़ी गरिमा, शालीनता परंपरा का प्रतीक है। बीच में साड़ी का जोर कमज़ोर पड़ा पर आज की युवतियाँ भी खूब खुशी खुशी साड़ी पहन रही हैं उसके साथ कलात्मक बिंदिया, व ऑक्सीडाइज़ ज्वैलरी पहनती हैं।

उसके बाद शाही और धनी महिलाओं ने सोने के धागे, ज़री, चांदी, कीमती पत्थर से सजी साड़ियाँ बनवाई। पहले राजघराने में ख़ासतौर से राजस्थान में रानियाँ शिफॉन के दुपट्टे के साथ लहंगा चोली पहनती थी फिर आज की महिलायें शिफॉन साड़ी जो सिर पर पल्ला रख के पहनी जाती हैं

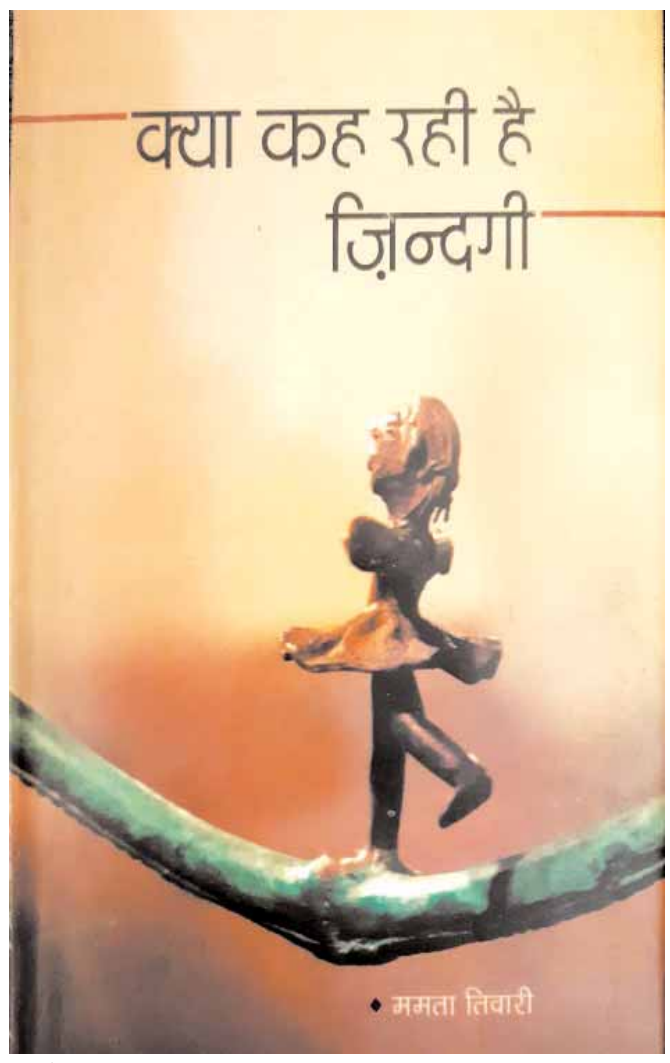

जैसे गायत्री देवी, वसुंधरा राजे सिंधिया शिफॉन पहनती हैं।

ब्रिटिश काल में मुगल उद्यानों से प्रभावित पुष्प रूपांकन या पौराणिक लोक कथाओं की पूरी कहानी साड़ी पर बुनी जाती या विक्टोरियन लेस से प्रेरित बॉर्डर लगा के साड़ियों की छटा देखते बनती थी। ये भारत का पहला अंतर्राष्ट्रीय परिधान है विदेशी महिलायें अब इसे शौक से पहनती हैं युवतियों की सुविधा के लिये प्री स्टीच्ड साड़ी, फ्यूज़न स्टाइल, साड़ी गाउन का प्रावधान है।

साड़ी ड्रेपिंग में निवी शैली (आंध्रप्रदेश), बंगाली शैली, गुजराती शैली (सीधा पल्लू), महाराष्ट्रीयन शैली (नौवारी) कूर्ग शैली (कर्नाटक) पैंट स्टाइल ड्रेप, बेल्टेड साड़ी इंफिनिटी स्टाइल ड्रेप, स्प्लिट प्लीट ड्रेप है। साड़ी ड्रेपिंग की भी एक दुनिया बन गई आजकल की युवतियाँ तरह तरह की स्टाइल में साड़ियाँ पहनती हैं। दिल्ली, मुम्बई, बॉलीवुड, बड़े उद्योगपतियों के यहाँ साड़ी ड्रेपिंग 3000 से 1,00,000 लाख तक चार्ज होते हैं। अंबानी परिवार इसका उदाहरण है। डॉली जैन 500 रूपये से अपने काम की शुरूआत करने वाली आज की सबसे महंगी साड़ी ड्रेपिंग कलाकार है। उन्होंने साड़ी ड्रेपिंग की 325 शैलियाँ विकसित की हैं और सबसे तेज साड़ी ड्रेपिंग के लिये विश्व रिकार्ड बनाया है।

अभी तक की सबसे महंगी साड़ी ''विवहा पट्टू'' है जिसे गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में सूचीबद्ध किया है। इस साड़ी की कीमत लगभग 40 लाख है। इसमें भारतीय चित्रकार राजा रवि वर्मा की 11 प्रसिद्ध पेंटिग्स को साड़ी पर बुना गया है। इसे बनाने में चांदी, सोने प्लेटिनम धागे, पन्ने पुखराज, हीरा माणिक नवरत्न पत्थरों से सजाया गया है। इसे चेन्नई के 36 कारीगरों ने 12 महीने से अधिक समय में बुना था। इसका वजन 8 किलोग्राम है। इसे आजतक किसी सेलिब्रिटी द्वारा नहीं पहना गया है। कहा जाता है राजा रवि वर्मा की पेंटिंग में दर्शाई गई साड़ी की कीमत उनकी कलाकृति के मूल्य बराबर है जो 19वीं सदी की बात है। यह सबसे महंगी पेंटिंग 38 करोड़ में बेची गई थी। चलिये अब देखते हैं हमारे यहाँ किस राज्य और शहर में कौन सी साडियाँ बनती हैं।

उत्तर प्रदेश- बनारसी, सिल्क, चिकनकारी, उत्तराखंड में पिथौरागढ़

तमिलनाडु- कांचीपुरम सिल्क

आंध्रप्रदेश- धर्मावरम सिल्क

कर्नाटक- मैसूर सिल्क

केरल- कसावु

गुजरात- पटोला, बांधनी

महाराष्ट्र- पैठणी

पश्चिम बंगाल- कांथा, बालूचेरी

असम- मूंगा सिल्क

ओडिशा- संबलपुरी, इक्कत

मध्य प्रदेश- चंदेरी, माहेश्वरी, बाग, अजरक।

इसके अलावा कश्मीर की कश्मीर सिल्क, पारसियों की हाथ से कढ़ी रेशमी बॉर्डर की पारसी साड़ी भी है। केरल की साड़ी जो वास्तव में 'कसावु' साड़ी है। यह आमतौर पर ऑफ व्हाइट और क्रीम कलर की सुनहरे बॉर्डर की रेशमी या कॉटन साड़ी होती है। इसे सब, गरीब हो या अमीर, उत्सव में पहनते हैं। इसे केरल में सेट्टू मुंडु शैली में पहना जाता है जिसमें एक कपड़ा कमर पर लपेटते हैं दूसरा कंधे पर डालते हैं। इसे ''ओणम'' त्यौहार में पहनते हैं। कलमकारी ब्लॉक प्रिंटेड, सूती वस्त्र कला है जो आंध्रप्रदेश में तेलंगाना में की जाती है।

आजकल 'मुडाल सिल्क' बहुत प्रचलन में है। दरअसल ये कैरी करने में बहुत आसान मटेरियल है। लड़कियां इसे दुबले लगने की वजह से पहनती हैं। इसका टेक्सचर मक्खन की तरह चिकना व चमकदार होता है।

हमारी माताएं गर्मियों में ऑर्गेंडी साड़ी निकालती थी जो पूर्णतः सूती होती थी। यह कपड़ा सबसे पहले स्विट्जरलैंड में विकसित हुआ। आजकल इसे लिनेन साड़ी के नाम से जानते हैं। लिनेन (सन के पौधे से प्राप्त) कसा हुआ सूती धागों से बना है। निम्न मध्यमवर्गीय के बीच 60 वीं सदी के दशक में सुविधा के लिये, पॉलिस्टर, नायलॉन, सिंथेटिक और उच्चवर्गीय के लिये बेहतरीन क्रेप सिल्क का उपयोग प्रचलित है।

अब साड़ी और बुनकरों को बढ़ावा देने के लिये खादी भी उपयोग में लाई जाती है। लिनेन खादी का महीन (फाईन) रूप है। साड़ी को बढ़ावा देने के लिये देश में कई महिलाओं ने संस्था या ग्रुप बना लिये हैं। मेदांता हॉस्पिटल ने उड़ान ग्रामीण और शहरी विकास समिति द्वारा साड़ी वॉकथान शुरू किया। शाम को इंदौर में भी साड़ी वॉकथान हुआ जिसमें हथकरघा और भारतीय संस्कृति के प्रति जागरूक कराने का प्रयास हुआ। 'साड़ी स्पीक' एक ग्लोबल ऑनलाइन कम्यूनिटी है जो साड़ी को प्रोत्साहित करती है। दक्षिण एशिया में, बर्कशायर में महिलाएं एक बार साड़ी पहनकर अपना संग्रह और संस्कृति को प्रदर्शित करती हैं। यूके की श्रुति बेलगावी भारत के बुनकरों की साड़ियां विदेश में फेमस कर रही हैं।

'साड़ी स्पीक' की सहसंस्थापक महिमा बोस कहती हैं हम साड़ियों पर बातें करते हैं। क्विज खेलते हैं। यूँ वो विदेश में भारतीय साड़ी की गरिमा को ज़िंदा रखे हुये हैं।

तो पहनिये एक से बढ़कर एक साड़ी (क्योंकि हर साड़ी सुंदर होती है। महिलायें साड़ी में सबसे सुंदर लगती भी हैं) और पूछते रहिए एक दूसरे से और क्या कह रही है ज़िंदगी।

मुस्कान के पीछे... तबाही की दास्तान !

❐ यूके से
प्रज्ञा मिश्रा

जिस दौर में दिल्ली में मिर्जा गालिब मुशायरे लूट रहे थे, उसी दौर में इंग्लैंड में महिला अपनी किताबों से वो दुनिया दिखा रही थी, जो लोगों के सामने तो थी, लेकिन उसकी बात होती नहीं थी, जिसकी पहली किताब 'सेंस एंड सेंसिबिलिटी' 1811 में छपी और उस किताब (और उसके बाद आने वाली लगभग सभी किताबों पर) पर लिखने वाले के नाम की जगह लिखा था 'एक महिला की लिखी।'

उस वक्त कौन जानता था कि न सिर्फ यह किताब, बल्कि उसके बाद की कई किताबें और उनको लिखने वाली जेन ऑस्टेन रहती दुनिया तक याद की जाएंगी। इस साल 16 दिसंबर को उनकी 250वीं सालगिरह मनाई गई और दुनिया भर में जेन ऑस्टेन को पसंद करने वालों ने ढेरों कार्यक्रम किए।

आज भी जेन ऑस्टेन क्यों इतनी खास हैं, यह सवाल लाजमी है! सही मायनों में जेन को मॉडर्न लिटरेरी टेक्नीक को आगे बढ़ाने के साथ क्लास, जेंडर और पैसे पर मजेदार तंज के जरिए तीखी सोशल कमेंट्री करने की शुरुआत करने का श्रेय है। उन्होंने ऐसे किरदार लिखे, जिनके लिए प्यार और रिश्ते जरूरी हैं, जिनकी प्यार और खुद की खोज पसंद आती है। यही वजह है कि वह साहित्य में बुनियादी हस्ती होने के साथ-साथ हमेशा रहने वाला कल्चरल आइकॉन बन जाती हैं। महिलाओं की अंदरूनी जिंदगी और रोजमर्रा की मुश्किलों, खासकर शादी पर उनके फोकस ने इंग्लिश लिटरेचर में महिलाओं को अनोखा नजरिया दिया, जो जेन से पहले नजरअंदाज किया जाता रहा।

आज के जमाने में जहां औरतें विरासत में प्रॉपर्टी ले सकती हैं, अगर वे किसी आदमी के साथ लंदन चली जाती हैं तो उनके

परिवार को शर्म नहीं आएगी, और जहां पुरुष को पत्नी की जरूरत नहीं होती, जेन ऑस्टेन की 'प्राइड एंड प्रेजुडिस' का लगातार पॉपुलर होना हैरान कर सकता है। फिर भी, कई लोग उस किताब को पसंद करते हैं, जिसे एक बार पब्लिक वोट से अब तक की दूसरी सबसे अच्छी किताब कहा गया था। हैशटैग पर दो लाख से ज्यादा पोस्ट हैं, जहां जोर-शोर से बहस कर रहे हैं।

इंग्लैंड के स्टीवनटन में 16 दिसंबर, 1775 को जेन ऑस्टेन का जन्म हुआ, पादरी और आठ बच्चों में सातवीं थी। पढ़ने की शौकीन थी, उसने शादी नहीं की और उसकी (41) मौत हो गई। सिर्फ कुछ दशकों में, जेन ऑस्टेन ने दुनिया बदल दी। ब्रिटिश समाज की साफ तस्वीरें, क्रांतिकारी कहानी के प्रोजेक्ट और ऐतिहासिक रोमांस के तौर पर न सिर्फ उनकी किताबें पसंद की जाती हैं- बल्कि उनकी कहानियां संस्कृति में इतनी घुल-मिल गई हैं कि दुनिया भर के लोग एलिजाबेथ बेनेट और मिस्टर डार्सी के बारे में काफी जानते हैं, भले ही उन्होंने 'प्राइड एंड प्रेजुडिस' न पढ़ी हो, क्योंकि मिस्टर डार्सी जैसा कोई है नहीं।

ऑस्टेन के आखिरी दो पूरे नॉवेल, 'नॉर्थेंजर एबे' और 'परसुएशन' उनकी मौत के बाद छपे। बैंक ऑफ इंग्लैंड ने 10 पाउंड का नोट (2017) जारी किया, जिसमें जेन ऑस्टेन का पोर्ट्रेट और 'प्राइड एंड प्रेजुडिस' की लाइन थी- 'मैं कहती हूं कि पढ़ने जैसा मजा और कोई नहीं है!' क्वीन एलिजाबेथ के अलावा ब्रिटिश करेंसी पर छपने वाली तीसरी महिला आस्टिन हैं, और अभी अकेली हैं। और इतने बरस बाद भी अगर कोई समस्या आती है- जैसे शिष्टाचार, रोमांस, घरेलू या पेशेवर उथल-पुथल तो कभी-कभी केवल यही पूछा जाता है- ऐसे में जेन क्या करती?